CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?
नित यहाँ शक्ति के आगे, दीपक जलते मग-मग में ।
कुछ तनिक ध्यान से सोचो, धरती किसकी हो पाई ?
बोलो युग-युग तक किसने, किसकी विरुदावलि गाई ?
मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है ।
जग रंगमंच का अभिनय, जो आता सो जाता है ।
सचमुच वह ही जीवित है, जिसमें कुछ बल-विक्रम है ।
पल-पल घुड़दौड़ यहाँ है, बल-पौरुष का संगम है
दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता,
वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता ।
फिर क्या विषाद, भय चिंता जो होगा सब सह लेंगे,
परिवर्तन की लहरों में जैसे होगा बह लेंगे । [5 अंक]

1(क). कविता का मूल सन्देश क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता के मूल संदेश में सभी पंक्तियों को जोड़ने वाला विचार लिखा जाता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें आरंभ में कवि पूछता है कि आँसुओं से कब भाग्य बदला है। इससे स्पष्ट है कि केवल रोना या दुःख करना जीवन की कठिनाइयों का समाधान नहीं है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें आगे बल, विक्रम और पौरुष का महत्त्व बताया गया है। अंतिम पंक्तियाँ भय और चिंता छोड़कर परिवर्तन का सामना करने की प्रेरणा देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का मूल संदेश है कि मनुष्य साहस, शक्ति और पुरुषार्थ के साथ जीवन के संघर्षों तथा परिवर्तनों का सामना करे; निराश होकर आँसू न बहाए।

त्वरित सुझाव: आरंभ के आँसू और अंत के साहस को जोड़ें; मूल संदेश में पुरुषार्थ तथा परिवर्तन का सामना करने की प्रेरणा अवश्य लिखें।

1(ख). 'रोने से दुर्भाग्य सौभाग्य में नहीं बदल जाता' के भाव की पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दी गई उक्ति का भाव काव्यांश में प्रयुक्त शब्दों और आशय से मिलाकर पहचानना चाहिए।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें प्रश्न में रोने के द्वारा दुर्भाग्य न बदलने की बात कही गई है। काव्यांश की पहली पंक्ति में आँसू और भाग्य का सीधा संबंध प्रश्न के रूप में रखा गया है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें यह प्रश्नवाचक कथन वास्तव में नकार का भाव देता है। कवि का आशय है कि संसार में केवल आँसू बहाने से भाग्य अनुकूल नहीं होता। इसलिए यही पंक्ति दिए हुए भाव के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष 'आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?'

त्वरित सुझाव: भाव में रोने का संकेत देखकर आँसू वाला शब्द खोजें और कविता की पहली पूरी पंक्ति ज्यों की त्यों लिखें।

1(ग). समय किसे नष्ट कर देता है और कैसे ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कथन का उत्तर उसके स्पष्ट संकेत और संबंधित पंक्ति से मिलता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें कवि कहता है, 'दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता'। इसमें समय द्वारा नष्ट किए जाने वाले व्यक्ति को स्पष्टत: दुर्बल कहा गया है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें दुर्बल व्यक्ति जीवन की निरंतर प्रतिस्पर्धा और संघर्ष का सामना नहीं कर पाता। समय उसे सहज ही, बिना किसी शोर के मिटा देता है; उसकी कोई स्थायी पहचान नहीं रह जाती।

चरण 3: निष्कर्ष समय दुर्बल व्यक्ति को सहजता से और चुपचाप नष्ट कर देता है, क्योंकि वह जीवन के संघर्ष का सामना नहीं कर पाता।

त्वरित सुझाव: दुर्बल और चुपचाप शब्द याद रखें; उत्तर में किसे और कैसे, दोनों का उल्लेख इन्हीं से पूरा होगा।

1(घ). इतिहास किसे याद रखता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसी निष्कर्ष का कारण उससे जुड़ी पंक्तियों के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें काव्यांश में कहा गया है, 'वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता'। इससे स्पष्ट है कि इतिहास वीर और पराक्रमी व्यक्तियों को याद रखता है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें वीर व्यक्ति बल, साहस और पुरुषार्थ के सहारे संघर्षों का सामना करते हैं। उनके पराक्रम में स्मरण किए जाने योग्य विशेषता होती है; इसलिए उनका यश पीढ़ियों तक दोहराया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इतिहास वीरों को याद रखता है, क्योंकि वे साहस और पराक्रम से जीवन के संघर्षों का सामना करते हैं तथा स्मरणीय कार्य करते हैं।

त्वरित सुझाव: इतिहास सदा दोहराता पंक्ति को वीरों से जोड़ें और क्यों के उत्तर में उनके साहस तथा पराक्रम का कारण दें।

1(ङ). 'मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्राकृतिक ऋतुओं के उल्लेख से व्यक्त जीवन के सांकेतिक अर्थ को समझना भावार्थ का आधार है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें मधुमास अर्थात वसंत सुंदरता और आनंद का प्रतीक है। पतझर उसके विपरीत अभाव और कठिनाई का संकेत देता है। कवि दोनों ऋतुओं के आने की बात करता है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें जिस प्रकार प्रकृति में एक ऋतु सदा नहीं रहती, उसी प्रकार जीवन में भी सुख स्थायी नहीं है। आनंद के बाद कठिनाइयाँ आ सकती हैं, इसलिए परिवर्तन को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव है कि जीवन में सुख के साथ दुःख भी आते हैं। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं; अतः मनुष्य को दोनों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

त्वरित सुझाव: मधुमास को सुख और पतझर को दुःख मानकर अर्थ खोलें; केवल ऋतुओं का वर्णन करके उत्तर समाप्त न करें।

---

2. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

विषमता शोषण की जननी है । समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतया शोषण उतना ही अधिक होगा । चूँकि हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक असमानताएँ अधिक हैं जिसकी वज़ह से एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही दूसरे स्थान पर शोषित होता है । चूँकि जब बात उपभोक्ता संरक्षण की हो तब पहला प्रश्न यह उठता है कि उपभोक्ता किसे कहते हैं ? या उपभोक्ता की परिभाषा क्या है ? सामान्यतः उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को उपभोक्ता कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं । इस प्रकार सभी व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में शोषण का शिकार अवश्य होते हैं ।

हमारे देश में ऐसे अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोगों की भीड़ है जो शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं । वे दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश की समाजोपयोगी ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित हैं, जिन्हें आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों एवं तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने मिलकर बाँट लिया है । सही मायने में शोषण इन्हीं की देन है ।

उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादकता व व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से ही लिया जाता है जबकि इसके क्षेत्र में वस्तुएँ एवं सेवाएँ दोनों ही सम्मिलित हैं, जिनके अन्तर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील सभी आते हैं । इन सबने शोषण के क्षेत्र में जो कीर्तिमान बनाए हैं वे वास्तव में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज़ कराने लायक हैं । [15 अंक]

2(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समुचित शीर्षक संक्षिप्त होता है और पूरे गद्यांश के केंद्रीय विषय का प्रतिनिधित्व करता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें गद्यांश विषमता से उत्पन्न शोषण का उल्लेख करता है। इसके बाद उपभोक्ता की परिभाषा और वस्तुओं तथा सेवाओं का उपयोग करने वाले लोगों के शोषण की चर्चा की गई है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें लेखक व्यापारियों के साथ डॉक्टर, शिक्षक, अधिकारी और वकील जैसी सेवा देने वाली श्रेणियों को भी इस चर्चा में रखता है। इसलिए केवल आर्थिक विषमता कहने की अपेक्षा उपभोक्ता शोषण पूरे विषय को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश का समुचित शीर्षक है—'उपभोक्ता शोषण'।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में वस्तुओं और सेवाओं दोनों के उपयोगकर्ताओं की समस्या समेटें; उपभोक्ता शोषण दोनों पक्षों को व्यक्त करता है।

2(ख). 'विषमता' शब्द से मूल शब्द तथा प्रत्यय छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय वह शब्दांश है जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें विषमता का अर्थ असमानता या विषम होने का भाव है। इसके मूल में विशेषण विषम है, जिसका अर्थ असमान होता है। यहाँ पूरे शब्द से अंतिम भाववाचक अंश को अलग करना है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें विषम के बाद ता जोड़ने से भाववाचक संज्ञा विषमता बनती है। इसलिए मूल शब्द विषम और प्रत्यय ता हैं। विष उपसर्ग या मता प्रत्यय मानना इस शब्द की सही रचना को नहीं दिखाता।

चरण 3: निष्कर्ष 'विषमता' में मूल शब्द 'विषम' तथा प्रत्यय 'ता' है।

त्वरित सुझाव: विषमता से ता हटाकर देखें: बचा विषम स्वतंत्र विशेषण है; इसी जाँच से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करें।

2(ग). 'ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित है' – वाक्य का आशय समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य का आशय संदर्भ में प्रयुक्त शब्दों और लेखक द्वारा बताए सामाजिक तथ्य से स्पष्ट होता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें ऊर्ध्वमुखी का सामान्य अर्थ ऊपर की ओर ले जाने वाला है। यहाँ ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से आशय ऐसी समाजोपयोगी विकास योजनाओं से है जो लोगों का जीवनस्तर ऊपर उठाने और उनकी उन्नति के लिए बनाई गई हैं। वंचित होने का अर्थ इनके लाभ से दूर रह जाना है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें गद्यांश में अशिक्षित, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की बात है जो मलिन बस्तियों, फुटपाथों और झोपड़ियों में जीवन बिताते हैं। योजनाओं का लाभ उन तक पहुँचने के बजाय सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने आपस में बाँट लिया है। इसलिए जिन लोगों को सहायता की आवश्यकता है, वे उससे लाभान्वित नहीं हो पाते।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य का आशय है कि गरीब और अशक्त लोगों का जीवनस्तर सुधारने के लिए बनाई गई जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उन्हें नहीं मिलता; प्रभावशाली वर्ग उनके लाभ पर अधिकार कर लेता है।

त्वरित सुझाव: ऊर्ध्वमुखी का अर्थ जीवनस्तर ऊपर उठाना लिखें और वंचित का अर्थ समझाते हुए गरीबों तक लाभ न पहुँचने की बात जोड़ें।

2(घ). 'विषमता शोषण की जननी है' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट करते हुए कथन की व्याख्या गद्यांश के तथ्यों से करनी चाहिए।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें विषमता का अर्थ लोगों के बीच सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानता है। गद्यांश के अनुसार समाज में ये असमानताएँ जितनी अधिक होती हैं, सामान्यतः शोषण भी उतना ही अधिक होता है। संसाधन और प्रभाव रखने वाले लोगों की स्थिति मजबूत होती है, जबकि कमजोर लोगों की स्थिति निर्भरता की होती है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें अशिक्षित और आर्थिक रूप से अशक्त लोग अपने हितों की रक्षा प्रभावी ढंग से नहीं कर पाते। प्रभावशाली वर्ग उनकी इसी कमजोरी का लाभ उठाता है। गद्यांश में गरीबों के लिए बनी योजनाओं के लाभ को व्यापारियों, नौकरशाहों और सफ़ेदपोशों द्वारा बाँट लेने का उदाहरण दिया गया है। यही असमान स्थिति शोषण को जन्म देती और बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष विषमता शोषण की जननी है, क्योंकि सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक असमानता शक्तिशाली वर्ग को कमजोर लोगों की विवशता का लाभ उठाने का अवसर देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखें: असमानता, कमजोर वर्ग की विवशता, प्रभावशाली वर्ग द्वारा लाभ उठाना; योजनाओं का उदाहरण जोड़ें।

2(ङ). समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा । वाक्य-भेद लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उस पर आश्रित कम-से-कम एक उपवाक्य होता है।
- उत्तर को प्रश्न में पूछे गए पक्ष तक सीमित रखते हुए पाठ के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें इस वाक्य में जितनी विषमता होगी वाला अंश आश्रित उपवाक्य है। उसका अर्थ अगले कथन से जुड़कर पूरा होता है। इसमें जितनी शब्द संबंध स्थापित करता है।

चरण 2: अर्थ और तर्क स्पष्ट करें सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा प्रधान उपवाक्य है। जितनी और उतना का संबंध विषमता तथा शोषण की मात्रा को जोड़ता है। दो क्रियाएँ होने मात्र से यह संयुक्त वाक्य नहीं बन जाता, क्योंकि दोनों उपवाक्य स्वतंत्र नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह मिश्र वाक्य है। इसमें जितनी विषमता होगी आश्रित और सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा प्रधान उपवाक्य है।

त्वरित सुझाव: जितनी और उतना का जोड़ा पहचानें; जितनी वाला आश्रित उपवाक्य दिखाकर रचना के आधार पर मिश्र वाक्य लिखें।

2(च). उपभोक्ता शोषण से क्या आशय है ? इसकी सीमाएँ कहाँ तक हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में आशय और सीमा, दोनों पूछे गए हैं; उत्तर में दोनों का अलग उल्लेख आवश्यक है।
- गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में वस्तुओं के साथ सेवाओं को भी शोषण के क्षेत्र में रखा गया है।

चरण 1: आशय स्पष्ट करें उपभोक्ता शोषण का आशय वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करने वाले व्यक्ति के साथ होने वाले शोषण से है। सामान्यतः इसे उत्पादकों और व्यापारियों द्वारा किए जाने वाले शोषण तक सीमित समझा जाता है। गद्यांश इसी सीमित धारणा को अधूरा बताता है, क्योंकि उपभोक्ता केवल वस्तुएँ खरीदने वाला व्यक्ति नहीं है।

चरण 2: सीमा का विस्तार बताएँ इसका क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं, दोनों तक फैला है। इसलिए इसमें उत्पादकों तथा व्यापारियों के अतिरिक्त डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी और वकील जैसे सेवा देने वाले लोग भी आते हैं। लेखक इन क्षेत्रों में होने वाले शोषण का उल्लेख करके बताता है कि उपभोक्ता संरक्षण का प्रश्न व्यापार तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष उपभोक्ता शोषण वस्तुओं या सेवाओं के उपयोगकर्ता का शोषण है। इसकी सीमा उत्पादकों और व्यापारियों से आगे डॉक्टरों, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा वकीलों की सेवाओं तक विस्तृत है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखने के बाद वस्तुएँ और सेवाएँ, दोनों शब्द जोड़ें तथा गद्यांश से सेवा-क्षेत्र के उदाहरण दें।

2(छ). देश की समाजोपयोगी योजनाओं से कौन-सा वर्ग वंचित रह जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में वंचित लोगों की स्थिति और स्थानों का विवरण दिया गया है।
- उत्तर में वंचित वर्ग की पहचान तथा योजनाओं का लाभ हड़पने वालों का उल्लेख करना चाहिए।

चरण 1: वंचित वर्ग की पहचान करें देश की समाजोपयोगी योजनाओं से अशिक्षित, सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल तथा अशक्त लोग वंचित रह जाते हैं। ये लोग मलिन बस्तियों, फुटपाथों, सड़कों, रेलवे लाइनों और गंदे नालों के किनारे झोपड़ियाँ डालकर किसी तरह

जीवन बिताते हैं। गद्यांश इन लोगों की कठिन दशा का उल्लेख करके योजनाओं की पहुँच का प्रश्न उठाता है।

चरण 2: वंचित रहने का कारण बताएँ इन लोगों तक योजनाओं के लाभ इसलिए नहीं पहुँचते कि आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने उन्हें आपस में बाँट लिया है। जिन योजनाओं से कमजोर लोगों के जीवन में सुधार होना चाहिए था, उनका लाभ प्रभावशाली वर्ग ले लेता है। यही लाभ का अनुचित बँटवारा उनके वंचित रह जाने का कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष अशिक्षित, सामाजिक-आर्थिक रूप से दुर्बल और अशक्त वर्ग योजनाओं से वंचित रहता है, क्योंकि सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों तथा तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इन योजनाओं के लाभ आपस में बाँट लिए हैं।

त्वरित सुझाव: कौन और क्यों को दो अलग बिंदुओं में सोचें; कारण में केवल गरीबी नहीं, लाभों के अनुचित बँटवारे का उल्लेख करें।

2(ज). उपभोक्ता किसे कहते हैं ? उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का पहला भाग गद्यांश में दी गई उपभोक्ता की परिभाषा पर आधारित है।
- आरंभिक वाक्य विषमता और शोषण के बीच कारण-संबंध स्पष्ट करता है।

चरण 1: उपभोक्ता की परिभाषा दें जो व्यक्ति या व्यक्ति-समूह सीधे तौर पर किसी वस्तु अथवा सेवा का उपयोग करता है, उसे उपभोक्ता कहते हैं। इस परिभाषा में वस्तुओं और सेवाओं, दोनों के उपयोगकर्ता सम्मिलित हैं। केवल बाजार से सामान खरीदने वाले को ही उपभोक्ता मानना गद्यांश में दी गई व्यापक परिभाषा को सीमित कर देना होगा।

चरण 2: शोषण का मुख्य कारण स्पष्ट करें उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण समाज में व्याप्त विषमता है। गद्यांश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानताओं का उल्लेख है। लेखक का कथन है कि समाज में विषमता जितनी अधिक होगी, सामान्यतः शोषण भी उतना अधिक होगा। इसी कारण एक व्यक्ति किसी स्थान पर शोषक और दूसरे स्थान पर शोषित हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुओं अथवा सेवाओं का सीधे उपयोग करने वाला व्यक्ति या व्यक्ति-समूह उपभोक्ता है। उसके शोषण का मुख्य कारण सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विषमता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में वस्तु और सेवा दोनों रखें; मुख्य कारण बताते समय गद्यांश के आरंभिक वाक्य को आधार बनाएँ।

2(झ). सामान्यतः शोषण का दोषी किसे कहा जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामान्यतः शब्द उत्तर को प्रचलित धारणा तक सीमित करता है।
- गद्यांश सामान्य धारणा बताने के बाद सेवाओं में होने वाले शोषण की ओर ध्यान दिलाता है।

चरण 1: सामान्य धारणा बताएँ सामान्यतः उत्पादकों और व्यापारियों को उपभोक्ता शोषण का दोषी कहा जाता है। गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में कहा गया है कि उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य प्रायः इन्हीं द्वारा किए गए शोषण से लिया जाता है। अतः प्रश्न के सामान्यतः शब्द को ध्यान में रखकर पहले इसी वर्ग का नाम लिखना चाहिए।

चरण 2: कारण और प्रसंग स्पष्ट करें ऐसा इसलिए कहा जाता है कि उपभोक्ता शोषण को प्रायः वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार के क्षेत्र में होने वाले शोषण के रूप में देखा जाता है। लोगों की दृष्टि उत्पादकों और व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण पर रहती है। किंतु लेखक बताता है कि यह धारणा सीमित है; सेवाओं के क्षेत्र में भी शोषण होता है और वहाँ डॉक्टर, शिक्षक, अधिकारी तथा वकील भी आते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः उत्पादकों और व्यापारियों को शोषण का दोषी माना जाता है, क्योंकि उपभोक्ता शोषण को प्रायः उनके

द्वारा वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार के क्षेत्र में किए गए शोषण तक ही सीमित समझ लिया जाता है।

त्वरित सुझाव: सामान्य धारणा और लेखक की व्यापक दृष्टि में अंतर रखें; मुख्य उत्तर में उत्पादक तथा व्यापारी अवश्य लिखें।

3(क). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

भ्रष्टाचार की समस्या [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवेचन होता है; भूमिका, कारण, प्रभाव, उपाय और उपसंहार परस्पर जुड़े होने चाहिए।
- समस्या पर विचार करते समय व्यक्ति और समाज, दोनों की जिम्मेदारी स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा बनाएँ विषय भ्रष्टाचार की समस्या है। आरंभ में भ्रष्टाचार का अर्थ स्पष्ट करें। फिर इसके कारणों और सामाजिक प्रभावों की चर्चा करें। इसके बाद प्रशासनिक सुधार तथा नागरिक जिम्मेदारी से जुड़े उपाय बताएँ और अंत में ईमानदार आचरण का संकल्प रखें। भाषा सरल, विचार तार्किक और अनुच्छेद क्रमबद्ध हों।

चरण 2: पूर्ण निबंध लिखें भ्रष्टाचार की समस्या

भ्रष्टाचार का अर्थ है निजी लाभ के लिए अपने कर्तव्य, अधिकार या पद का अनुचित उपयोग करना। रिश्वत लेना-देना, पक्षपात करना, सार्वजनिक धन का दुरुपयोग और नियमों को स्वार्थ के अनुसार बदलना इसके रूप हैं। यह समस्या समाज में न्याय और विश्वास को कमजोर करती है।

अधिक धन और सुविधाएँ पाने का लोभ भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है। जब साधनों की शुद्धता की अपेक्षा सफलता और संपत्ति को अधिक महत्त्व दिया जाता है, तब अनैतिक व्यवहार बढ़ता है। जटिल प्रक्रियाएँ, काम में अनावश्यक देरी और जवाबदेही का अभाव भी इसे प्रोत्साहित करते हैं। यदि दोषियों को दंड का भय न हो तो गलत आचरण फैलता जाता है।

भ्रष्टाचार का सबसे अधिक भार सामान्य और कमजोर नागरिक पर पड़ता है। पात्र व्यक्ति अपने अधिकार से वंचित रह जाता है, जबकि प्रभावशाली व्यक्ति अनुचित लाभ पा लेता है। विकास के लिए निर्धारित धन का दुरुपयोग होने से शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य जनसुविधाएँ प्रभावित होती हैं। मेहनत और योग्यता की उपेक्षा युवाओं में निराशा पैदा करती है।

इस समस्या का समाधान केवल कानून बना देने से नहीं होगा। सरकारी प्रक्रियाएँ सरल और पारदर्शी हों, शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई हो तथा अधिकारियों की जवाबदेही निश्चित की जाए। सार्वजनिक धन के उपयोग की जानकारी लोगों को मिले और दोष सिद्ध होने पर निष्पक्ष दंड दिया जाए। ईमानदारी से काम करने वालों को संरक्षण भी आवश्यक है।

नागरिकों की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। हमें अपना काम जल्दी कराने के लिए रिश्वत देने या अनुचित सिफारिश का सहारा लेने से बचना चाहिए। परिवार और विद्यालय बच्चों में सत्यनिष्ठा, कर्तव्यबोध तथा सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सम्मान विकसित करें।

भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए व्यवस्था और व्यक्ति, दोनों में सुधार आवश्यक है। जब नागरिक ईमानदारी अपनाएँगे और संस्थाएँ निष्पक्ष ढंग से काम करेंगी, तभी न्यायपूर्ण तथा विश्वसनीय समाज का निर्माण होगा।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रष्टाचार का समाधान पारदर्शी व्यवस्था, प्रभावी जवाबदेही, निष्पक्ष दंड और नागरिकों के ईमानदार आचरण के संयुक्त प्रयास में है।

त्वरित सुझाव: निबंध में समस्या गिनाने के साथ कारण, प्रभाव और व्यवहार में अपनाए जा सकने वाले उपायों को क्रम से जोड़ें।

3(ख). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

देश की प्रगति में युवाशक्ति का योगदान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- युवाओं की ऊर्जा, शिक्षा और उत्तरदायित्व को राष्ट्रीय विकास से जोड़कर विचारपूर्ण निबंध लिखना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार आवश्यक हैं। उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा भाषा स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण हो।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार भूमिका में युवाशक्ति का महत्त्व रखें। मुख्य भाग में शिक्षा, रोजगार, विज्ञान, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक सहभागिता पर विचार करें। अंत में अवसर तथा अनुशासन की आवश्यकता स्पष्ट करें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है। इसलिए मुख्य पक्षों का पर्याप्त विस्तार करते हुए पुनरुक्ति से बचना उचित है। निबंध में शीर्षक दें और प्रत्येक अनुच्छेद को एक प्रमुख विचार से जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध देश की प्रगति में युवाशक्ति का योगदान

किसी देश की वास्तविक संपदा केवल उसकी भूमि, खनिज या उद्योग नहीं होते; उसके नागरिकों की क्षमता भी उसकी सबसे बड़ी शक्ति होती है। इस शक्ति का सबसे गतिशील रूप युवा वर्ग है। उत्साह, कल्पनाशीलता, साहस और परिवर्तन की इच्छा से संपन्न युवा देश को नई दिशा दे सकते हैं। इसलिए देश की प्रगति में युवाशक्ति का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षित और कुशल युवा उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाते हैं। किसान परिवार का पढ़ा-लिखा युवक जल-संरक्षण तथा वैज्ञानिक खेती अपनाकर गाँव की अर्थव्यवस्था सुधार सकता है। तकनीकी शिक्षा प्राप्त युवतियाँ और युवक नए उपकरण, उपयोगी सेवाएँ तथा छोटे उद्यम विकसित कर सकते हैं। नौकरी पाने के साथ रोजगार के अवसर पैदा करना भी राष्ट्रसेवा है। इसके लिए शिक्षा को व्यावहारिक प्रशिक्षण, परिश्रम और ईमानदारी से जोड़ना आवश्यक है।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में युवाओं की जिज्ञासा विशेष उपयोगी होती है। वे स्वास्थ्य, ऊर्जा, संचार और पर्यावरण की समस्याओं के नए समाधान खोज सकते हैं। किंतु प्रगति का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है। जब युवा जातिगत भेदभाव, दहेज, अशिक्षा और स्त्री-असमानता का विरोध करते हैं, तब समाज अधिक न्यायपूर्ण बनता है। अपने आसपास बच्चों को पढ़ाना, रक्तदान करना, स्वच्छता अभियान चलाना और संकट में लोगों की सहायता करना भी सार्थक योगदान है।

लोकतंत्र को जागरूक युवा नागरिकों की आवश्यकता होती है। तथ्यों के आधार पर विचार बनाना, मतदान करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और भ्रष्ट आचरण को अस्वीकार करना उनकी जिम्मेदारी है। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने के बजाय सही सूचना साझा करके वे सामाजिक सद्भाव बढ़ा सकते हैं। खेल, साहित्य और कला में उनकी उपलब्धियाँ भी देश के आत्मविश्वास तथा सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करती हैं।

युवाशक्ति का पूरा उपयोग तभी होगा जब सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और सम्मानजनक अवसर मिलें। बेरोजगारी, नशा और दिशाहीनता उनकी क्षमता को क्षीण करते हैं। परिवार, शिक्षण संस्थाएँ तथा सरकार उन्हें उचित मार्गदर्शन दें और युवा स्वयं अनुशासन तथा संवेदनशीलता अपनाएँ। अधिकारों के साथ कर्तव्यों का बोध रखने वाली युवाशक्ति ही देश की प्रगति को स्थायी और सर्वसमावेशी बना सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार देश की प्रगति में युवाशक्ति का योगदान विषय का विवेचन उसकी आवश्यकता, प्रमुख पक्षों और व्यावहारिक उपायों सहित पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: पहले भूमिका, मुख्य तर्क, उदाहरण और उपसंहार की छोटी रूपरेखा बनाएँ; फिर हर अनुच्छेद को विषय से सीधे जोड़कर लिखें।

3(ग). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

सब पढ़ें सब बढ़ें [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिक्षा के व्यक्तिगत तथा सामाजिक महत्त्व पर तर्कपूर्ण, सुसंगठित निबंध लिखना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार आवश्यक हैं। उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा भाषा स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण हो।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार भूमिका में नारे का अर्थ स्पष्ट करें। फिर शिक्षा के लाभ, शिक्षा से वंचित रहने के कारण तथा उन्हें दूर करने के उपाय रखें। उपसंहार में सबकी साझा जिम्मेदारी पर बल दें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है। इसलिए मुख्य पक्षों का पर्याप्त विस्तार करते हुए पुनरुक्ति से बचना उचित है। निबंध में शीर्षक दें और प्रत्येक अनुच्छेद को एक प्रमुख विचार से जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध सब पढ़ें सब बढ़ें

'सब पढ़ें सब बढ़ें' केवल एक आकर्षक नारा नहीं, बल्कि समतामूलक समाज का संकल्प है। इसका आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अवसर मिले और वह अपनी क्षमताओं का विकास कर सके। जब समाज के कुछ लोग ही आगे बढ़ते हैं, तब प्रगति अधूरी रहती है। सच्ची उन्नति में गरीब-अमीर, स्त्री-पुरुष और ग्रामीण-शहरी सभी की सहभागिता आवश्यक है।

शिक्षा मनुष्य को अक्षर पहचानने के साथ सोचने, समझने और उचित निर्णय लेने की शक्ति देती है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति स्वास्थ्य-संबंधी निर्देश समझ सकता है, अपने अधिकार पहचान सकता है और छल से बच सकता है। शिक्षा उसे आजीविका के बेहतर साधन खोजने में भी मदद करती है। किंतु इसका उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं है; सहिष्णुता, सहयोग, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करना भी है।

बालिकाओं की शिक्षा का विशेष महत्त्व है। शिक्षित बालिका अपने जीवन के निर्णय अधिक आत्मविश्वास से ले सकती है तथा परिवार और समाज में बराबरी से योगदान कर सकती है। इसी प्रकार वंचित समुदायों और दिव्यांग बच्चों को उपयुक्त सुविधाएँ मिलने से उनकी प्रतिभा सामने आती है। हर बच्चे को एक ही ढंग से पढ़ाने के बजाय उसकी आवश्यकता समझना शिक्षा को वास्तव में समावेशी बनाता है।

आज भी गरीबी, बालश्रम, विद्यालय की दूरी, सामाजिक पूर्वाग्रह और सुविधाओं का अभाव अनेक बच्चों को पढ़ाई से दूर करते हैं। केवल विद्यालय में नाम लिखवा देना पर्याप्त नहीं है। नियमित उपस्थिति, समझकर सीखना तथा पढ़ाई जारी रखना भी आवश्यक है। सुरक्षित विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक, पुस्तकालय, स्वच्छ शौचालय और सहज शिक्षण-सामग्री बच्चों के सीखने का वातावरण सुधारते हैं। जिन बच्चों की पढ़ाई छूट गई है, उन्हें सहयोग देकर फिर शिक्षा से जोड़ना चाहिए।

इस कार्य की जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। अभिभावक बेटियों और बेटों को समान अवसर दें, शिक्षक बच्चों का उत्साह बढ़ाएँ और नागरिक जरूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता करें। वयस्क साक्षरता भी आवश्यक है, क्योंकि सीखने की कोई अंतिम आयु नहीं होती। डिजिटल साधन उपयोगी हैं, पर उनका लाभ उन लोगों तक भी पहुँचना चाहिए जिनके पास उपकरण या इंटरनेट नहीं हैं।

जब शिक्षा सब तक पहुँचेगी, तभी विकास का लाभ भी व्यापक होगा। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति यदि किसी अन्य को सीखने में सहायता करे, तो यह संकल्प जन-आंदोलन बन सकता है। सबके पढ़ने से ही सबके बढ़ने का मार्ग खुलेगा।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार सब पढ़ें सब बढ़ें विषय का विवेचन उसकी आवश्यकता, प्रमुख पक्षों और व्यावहारिक उपायों सहित पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: पहले भूमिका, मुख्य तर्क, उदाहरण और उपसंहार की छोटी रूपरेखा बनाएँ; फिर हर अनुच्छेद को विषय से सीधे जोड़कर लिखें।

3(घ). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

वन रहेंगे हम रहेंगे [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वनों और मानव जीवन के संबंध को कारण, परिणाम तथा संरक्षण के उपायों सहित प्रस्तुत करना।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार आवश्यक हैं। उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा भाषा स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण हो।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार भूमिका में वनों पर जीवन की निर्भरता बताएँ। मुख्य भाग में पारिस्थितिक लाभ, वन-विनाश के दुष्परिणाम और संरक्षण के उपाय रखें। अंत में जिम्मेदार व्यवहार का आह्वान करें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है। इसलिए मुख्य पक्षों का पर्याप्त विस्तार करते हुए पुनरुक्ति से बचना उचित है। निबंध में शीर्षक दें और प्रत्येक अनुच्छेद को एक प्रमुख विचार से जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध वन रहेंगे हम रहेंगे

पृथ्वी पर मानव जीवन प्रकृति के अनेक परस्पर जुड़े तत्त्वों पर निर्भर है। वन इस जीवन-व्यवस्था का अत्यंत महत्त्वपूर्ण आधार हैं। वे केवल लकड़ी का भंडार नहीं, बल्कि असंख्य जीवों का घर, मिट्टी के रक्षक और जलचक्र के सहयोगी हैं। इसलिए 'वन रहेंगे हम रहेंगे' कथन हमारे अस्तित्व से जुड़ी सच्चाई को व्यक्त करता है।

वृक्ष प्रकाश-संश्लेषण के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वन कार्बन का भंडारण करते हैं तथा स्थानीय तापमान और नमी को प्रभावित करते हैं। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं, जिससे कटाव कम होता है। वनभूमि वर्षा के जल को सोखने तथा धीरे-धीरे छोड़ने में सहायता करती है। इससे जलस्रोतों के संरक्षण और जल-प्रवाह के संतुलन को बल मिलता है।

वन जैव-विविधता के आश्रय भी हैं। पक्षी, कीट, जंतु और अनेक प्रकार के पौधे मिलकर जटिल पारिस्थितिक संबंध बनाते हैं। किसी एक प्रजाति का विनाश अन्य जीवों को भी प्रभावित कर सकता है। अनेक वनवासी समुदाय भोजन, औषधियों, लघु वनोपज और आजीविका के लिए वनों पर निर्भर रहते हैं। उनका ज्ञान तथा सांस्कृतिक जीवन भी वन से गहराई से जुड़ा होता है।

अनियंत्रित कटाई, अवैध दोहन, आग और बिना समुचित योजना के निर्माण कार्य वनों को नुकसान पहुँचाते हैं। वन घटने से जीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट होते हैं और मिट्टी का क्षरण बढ़ता है। कई क्षेत्रों में जल-संकट तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष भी गंभीर हो जाते हैं। विकास के नाम पर ऐसी क्षति करना दूरदर्शिता नहीं, जो भविष्य की जीवन-सुरक्षा ही कमजोर कर दे।

वन-संरक्षण के लिए मौजूदा प्राकृतिक वनों को बचाना पहली आवश्यकता है। केवल पौधे लगा देना पर्याप्त नहीं; उनकी देखभाल और जीवित रहने की व्यवस्था भी जरूरी है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल विविध देशज प्रजातियाँ लगानी चाहिए। कागज और लकड़ी का विवेकपूर्ण उपयोग, पुनः उपयोग, आग से बचाव और अवैध कटाई पर नियंत्रण उपयोगी उपाय हैं। स्थानीय समुदायों की सहभागिता से संरक्षण अधिक प्रभावी और न्यायपूर्ण बन सकता है।

प्रकृति का संरक्षण किसी एक विभाग का काम नहीं है। नागरिक, उद्योग, विद्यालय और प्रशासन सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। हमें विकास और पर्यावरण के बीच सोच-समझकर संतुलन बनाना होगा। वन सुरक्षित रहेंगे, तभी जल, मिट्टी, जीव-जगत और मानव जीवन का भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार वन रहेंगे हम रहेंगे विषय का विवेचन उसकी आवश्यकता, प्रमुख पक्षों और व्यावहारिक उपायों सहित पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: पहले भूमिका, मुख्य तर्क, उदाहरण और उपसंहार की छोटी रूपरेखा बनाएँ; फिर हर अनुच्छेद को विषय से सीधे जोड़कर लिखें।

4. देश में क्षेत्रीयतावाद के कारण उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करता है और समाचार-पत्र के माध्यम से जनमत निर्माण की अपेक्षा रखता है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा हस्ताक्षर क्रम से दिए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय का चयन यह पत्र किसी निजी विवाद की शिकायत नहीं, बल्कि क्षेत्रीयतावाद से उत्पन्न राष्ट्रीय समस्या पर केंद्रित होगा। विषय संक्षिप्त रखा जाएगा। संबोधन के बाद समस्या, उसके दुष्परिणाम और व्यावहारिक सुझाव क्रम से प्रस्तुत किए जाएँगे। भाषा विनम्र, स्पष्ट और तथ्यपरक होगी।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले क्षेत्रीय पहचान और संकीर्ण क्षेत्रीयतावाद का अंतर स्पष्ट करें। फिर भाषा तथा प्रांत के आधार पर भेदभाव, रोजगार में बाधा, प्रवासियों की असुरक्षा और राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव बताएँ। अंत में प्रशासनिक कार्रवाई, संतुलित विकास और आपसी संवाद का सुझाव देकर पत्र प्रकाशित करने का अनुरोध करें। किसी विशेष प्रदेश के सभी निवासियों पर दोष न लगाएँ।

चरण 3: संपादक को पूरा पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
दिनांक: 13 मार्च, 2014
सेवा में
संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
विषय: क्षेत्रीयतावाद से उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने हेतु।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं देश में बढ़ते क्षेत्रीयतावाद की ओर समाज और शासन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अपनी भाषा और संस्कृति से प्रेम स्वाभाविक है, परंतु इस आधार पर दूसरे प्रदेशों के लोगों से भेदभाव करना चिंताजनक है।
संकीर्ण क्षेत्रीय सोच के कारण रोजगार, शिक्षा और आवास के अवसरों पर विवाद उत्पन्न होते हैं। प्रवासी श्रमिक और विद्यार्थी असुरक्षा अनुभव करते हैं। भाषा तथा प्रांत के नाम पर होने वाली हिंसा से जनजीवन प्रभावित होता है और राष्ट्रीय एकता कमजोर पड़ती है। राजनीतिक स्वार्थों के लिए ऐसी भावनाओं को भड़काना समस्या को और गंभीर बनाता है।
इस स्थिति में सभी क्षेत्रों का संतुलित विकास, रोजगार के अवसरों का विस्तार तथा भेदभाव के विरुद्ध निष्पक्ष कार्रवाई आवश्यक है। विद्यालयों और जनमाध्यमों में विविध संस्कृतियों के सम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित की जानी चाहिए। अंतरराज्यीय सांस्कृतिक संवाद भी बढ़ाया जाए।
कृपया इस विषय को अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर जनजागरण में सहयोग दें।
धन्यवाद।
भवदीय
अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में क्षेत्रीयतावाद के दुष्परिणामों के साथ राष्ट्रीय एकता, समान अवसर और परस्पर सम्मान पर आधारित समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय समस्या के साथ जनहितकारी सुझाव दें और अंत में प्रकाशन का अनुरोध अवश्य करें।

अथवा

4. अस्पताल में किसी रोगी के इलाज में बरती गई लापरवाही का विवरण देते हुए वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायती औपचारिक पत्र में घटना का क्रम, स्थान, तिथि, संबंधित रोगी और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट होती है।
- शिकायत की भाषा संयत होनी चाहिए; जाँच योग्य विवरण दें और निष्पक्ष जाँच के बाद जिम्मेदारी तय करने की माँग करें।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करना प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर वरिष्ठ चिकित्साधिकारी का पद तथा अस्पताल का पता दें। विषय में उपचार में लापरवाही की शिकायत स्पष्ट करें। मुख्य भाग में रोगी की जानकारी, घटना का क्रम, हुई परेशानी और अपेक्षित कार्रवाई रखें। अंत में संलग्न अभिलेखों का उल्लेख और प्रेषक का नाम लिखें।

चरण 2: शिकायत का आधार और कार्रवाई मॉडल पत्र में एक रोगी के उपचार में हुई देरी का विशिष्ट विवरण दिया जाएगा। परीक्षण रिपोर्ट समय पर न देखना और बार-बार अनुरोध के बाद भी सहायता न मिलना शिकायत के मुख्य बिंदु होंगे। निष्पक्ष जाँच, रोगी को उचित उपचार और शिकायत व्यवस्था में सुधार की माँग की जाएगी। बिना जाँच किसी की मंशा पर आरोप नहीं लगाया जाएगा।

चरण 3: वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को पूरा पत्र 18, शांति विहार
नई दिल्ली
दिनांक: 13 मार्च, 2014

सेवा में
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी
जिला चिकित्सालय
नई दिल्ली

विषय: रोगी के उपचार में बरती गई लापरवाही की शिकायत।

महोदय,

मैं आपके अस्पताल में अपने पिता श्री रमेश कुमार के उपचार के दौरान हुई लापरवाही की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। उन्हें 10 मार्च को तेज बुखार और अत्यधिक कमजोरी के कारण चिकित्सा वार्ड में भर्ती कराया गया था।

भर्ती होने के बाद निर्धारित जाँचें करा दी गई थीं, किंतु रिपोर्ट उपलब्ध होने पर भी काफी समय तक उनका चिकित्सकीय निरीक्षण नहीं किया गया। पिता जी की हालत बिगड़ने पर मैंने ड्यूटी पर उपस्थित कर्मचारियों से कई बार चिकित्सक को बुलाने का अनुरोध किया। इसके बावजूद समय पर सहायता नहीं मिली और हमें लगातार प्रतीक्षा करनी पड़ी। चिकित्सक के आने और उपचार मिलने के बाद ही उनकी स्थिति में सुधार हुआ। इस देरी से रोगी को अनावश्यक कष्ट तथा परिजनों को मानसिक परेशानी हुई।

आपसे अनुरोध है कि संबंधित अभिलेखों और ड्यूटी विवरण के आधार पर निष्पक्ष जाँच कराएँ तथा दोष पाए जाने पर उचित कार्रवाई करें। रोगी की नियमित निगरानी, जाँच रिपोर्ट की समय पर समीक्षा और तत्काल सहायता की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए, ताकि ऐसी घटना दोबारा न हो।

उपचार संबंधी पर्चे और जाँच रिपोर्ट की प्रतियाँ संलग्न हैं। कृपया शिकायत पर की गई कार्रवाई की सूचना दें।

धन्यवाद।

भवदीय
अमन कुमार
संलग्न: उपचार पर्चे और जाँच रिपोर्ट की प्रतियाँ।

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में उपचार में देरी का क्रमबद्ध विवरण देकर निष्पक्ष जाँच, समुचित चिकित्सा और व्यवस्था में सुधार की माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: शिकायती पत्र में घटना, समय, रोगी की परेशानी और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट रखें; भाषा में विनम्रता और संयम बनाए रखें।

5(क)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'फोन इन' क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में प्रस्तुति के विभिन्न रूपों से घटनास्थल की ताजा सूचना दर्शकों तक पहुँचाई जाती है।
- फोन इन में समाचार प्रस्तुतकर्ता और संवाददाता अथवा संबंधित व्यक्ति के बीच टेलीफोन पर बातचीत प्रसारित होती है।

चरण 1: प्रस्तुति की प्रक्रिया पहचानना किसी घटना की जानकारी लेने के लिए स्टूडियो में उपस्थित एंकर टेलीफोन द्वारा घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से संपर्क करता है। यह बातचीत समाचार प्रस्तुति का हिस्सा बनती है।

चरण 2: मुख्य विशेषता स्पष्ट करना इस माध्यम से घटना का ताजा विवरण दर्शकों को सुनाया जाता है। इसकी पहचान टेलीफोन से होने वाला संवाद है; संवाददाता का कैमरे के सामने दिखाई देना इसके लिए आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष 'फोन इन' समाचार प्रस्तुति का वह रूप है जिसमें एंकर टेलीफोन पर संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से बातचीत करके घटना की जानकारी दर्शकों तक पहुँचाता है।

त्वरित सुझाव: फोन इन का अर्थ लिखते समय टेलीफोन द्वारा संपर्क और समाचार संबंधी बातचीत, दोनों बातों को अवश्य शामिल करें।

5(क)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

पत्रकारिता में 'बीट' शब्द का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में समाचार-संग्रह का काम विषयों और क्षेत्रों के अनुसार बाँटा जाता है।
- बीट किसी संवाददाता को नियमित समाचार-संग्रह के लिए सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र है।

चरण 1: कार्य-विभाजन का आशय समझना समाचार संस्थान अपने संवाददाताओं को अलग-अलग विषयों अथवा क्षेत्रों की जिम्मेदारी देते हैं। इससे प्रत्येक विषय की घटनाओं पर नियमित निगरानी रखी जा सकती है और विश्वसनीय सूचनाएँ जुटाई जा सकती हैं।

चरण 2: उदाहरण से अर्थ स्पष्ट करना शिक्षा, स्वास्थ्य, अपराध या खेल किसी संवाददाता की बीट हो सकते हैं। संवाददाता अपने निर्धारित क्षेत्र के स्रोतों से संपर्क बनाए रखता है और उससे जुड़े समाचार एकत्र करता है। बीट का आशय केवल किसी एक समाचार से नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता में 'बीट' वह निश्चित विषय या क्षेत्र है जिसके समाचारों को नियमित रूप से एकत्र करने की जिम्मेदारी किसी संवाददाता को सौंपी जाती है; जैसे शिक्षा या अपराध।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा में निर्धारित विषय या क्षेत्र और संवाददाता की नियमित जिम्मेदारी लिखें, फिर एक उपयुक्त उदाहरण दें।

5(क)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

सम्पादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं होता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी समाचार-पत्र की नीतिगत राय और दृष्टिकोण व्यक्त करता है।
- संपादकीय का स्वर संस्थागत होता है, जबकि हस्ताक्षरित लेख में लेखक की व्यक्तिगत राय प्रस्तुत होती है।

चरण 1: संपादकीय का प्रतिनिधित्व पहचानना संपादकीय किसी महत्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र के विचार व्यक्त करता है। उसे लिखने वाला व्यक्ति चाहे कोई भी हो, प्रकाशित विचार समाचार-पत्र की संपादकीय नीति और संस्थागत दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चरण 2: लेखक का नाम न देने का कारण इसलिए संपादकीय के साथ व्यक्तिगत लेखक का नाम नहीं दिया जाता। उसका उद्देश्य किसी एक व्यक्ति की राय प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि समाचार-पत्र की ओर से विचार रखना है। इसे नाम सहित छपने वाले स्तंभ या लेख से अलग समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं होता क्योंकि उसमें किसी व्यक्ति के निजी विचारों के बजाय समाचार-पत्र की नीति और संस्थागत दृष्टिकोण व्यक्त होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में समाचार-पत्र की संस्थागत राय और व्यक्तिगत लेखक की राय का अंतर स्पष्ट करें; यही नाम न होने का कारण है।

5(क)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्वतन्त्र पत्रकार किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वतंत्र पत्रकार की पहचान किसी एक समाचार-संस्था की स्थायी नौकरी से मुक्त रहकर पत्रकारिता करना है।
- उसकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं या समाचार-माध्यमों में प्रकाशित हो सकती हैं।

चरण 1: कार्य की प्रकृति समझिए स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचारपत्र या पत्रिका का नियमित, वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह अपनी रुचि और विशेषज्ञता के अनुसार समाचार, रिपोर्ट या लेख तैयार करता है।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार पहचानिए वह अपनी रचनाएँ अलग-अलग समाचार-संस्थाओं को देता है और सामान्यतः प्रकाशित या स्वीकृत रचना के अनुसार पारिश्रमिक प्राप्त करता है। इसे फ्रीलांस पत्रकारिता भी कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी एक समाचार-संस्था का स्थायी कर्मचारी न होकर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्वतंत्र रूप से लिखता और रचना के आधार पर पारिश्रमिक पाता है, वह स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दो बातें अवश्य रखें: स्थायी नौकरी का अभाव और विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन।

5(क)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्तम्भ लेखन से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ-लेखन में किसी निश्चित विषय पर लेखक अपने विचार नियमित रूप से प्रस्तुत करता है।
- इसकी पहचान निर्धारित स्थान, नियमितता और लेखक की विशिष्ट दृष्टि से होती है।

चरण 1: प्रकाशन की नियमितता पहचानिए समाचारपत्र या पत्रिका में किसी निश्चित स्थान पर नियमित रूप से प्रकाशित होने वाला विचारप्रधान लेख स्तंभ कहलाता है। इसका विषय राजनीति, समाज, खेल, साहित्य या जीवन का कोई अन्य क्षेत्र हो सकता है।

चरण 2: लेखक की भूमिका स्पष्ट कीजिए स्तंभकार घटनाओं या मुद्दों की केवल सूचना नहीं देता; वह उनका विश्लेषण करते हुए अपनी राय भी रखता है। उसकी भाषा, शैली और दृष्टिकोण पाठकों के लिए उस स्तंभ की पहचान बनते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचारपत्र या पत्रिका में निर्धारित स्थान पर नियमित रूप से किसी विषय पर विशिष्ट दृष्टिकोण और शैली में विचार

प्रस्तुत करना स्तंभ-लेखन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नियमित प्रकाशन, निश्चित स्थान और लेखक के दृष्टिकोण का उल्लेख करके स्तंभ की पहचान स्पष्ट करें।

5(ख). 'केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का विवेचन और सार्थक निष्कर्ष आवश्यक हैं।
- प्राकृतिक आपदा का वर्णन करते समय प्राकृतिक कारणों, मानवीय हस्तक्षेप और बचाव के उपायों का संतुलित विवेचन करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। भूमिका में केदारनाथ आपदा का उल्लेख करें। फिर अतिवृष्टि, बाढ़ और भूस्खलन के प्रभाव तथा अनियोजित निर्माण से बढ़ी संवेदनशीलता समझाएँ। अंत में पर्यावरण-सम्मत विकास और आपदा-तैयारी के उपाय दें। आपदा को केवल धार्मिक दंड बताने के बजाय तथ्यों और मानवीय दायित्व पर ध्यान दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप

लेखक : अजय कुमार

जून 2013 में उत्तराखंड के केदारनाथ क्षेत्र में आई भीषण आपदा ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। अत्यधिक वर्षा, अचानक उमड़े जल और मलबे ने बस्तियों, सड़कों तथा तीर्थयात्रा के मार्गों को उजाड़ दिया। अनेक लोगों की जान चली गई और असंख्य परिवार अपनों से बिछुड़ गए। प्रकृति का सुंदर पर्वतीय क्षेत्र देखते-देखते विनाश और पीड़ा का दृश्य बन गया।

इस त्रासदी में प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ मनुष्य की असावधानी ने भी नुकसान बढ़ाया। नदियों के निकट अनियोजित निर्माण, पहाड़ों की अविवेकपूर्ण कटाई और वनस्पति का विनाश पर्वतीय पर्यावरण को कमजोर करते हैं। पर्यटन बढ़ाने की होड़ में यदि क्षेत्र की वहन-क्षमता और प्राकृतिक जलमार्गों की उपेक्षा हो, तो बाढ़ का प्रभाव अधिक विनाशकारी हो सकता है। विकास का अर्थ केवल सड़कें और इमारतें खड़ी करना नहीं है।

आपदा के बाद बचावकर्मियों, सैनिकों, स्थानीय निवासियों और स्वयंसेवकों ने कठिन परिस्थितियों में लोगों को सुरक्षित निकालने तथा सहायता पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया। ऐसी एकजुटता संकट में बड़ी शक्ति बनती है, किंतु केवल आपदा के बाद राहत देना पर्याप्त नहीं है। सुरक्षित निर्माण, मौसम की चेतावनी पर त्वरित कार्रवाई, यात्रियों की संख्या का उचित प्रबंधन और प्रशिक्षित बचाव-दल भी जरूरी हैं।

केदारनाथ की त्रासदी हमें प्रकृति की सीमाओं का सम्मान करना सिखाती है। पर्वतीय विकास में वैज्ञानिक अध्ययन, पर्यावरण-संरक्षण और स्थानीय समुदायों की भागीदारी अनिवार्य होनी चाहिए। तभी श्रद्धा, पर्यटन और आजीविका को सुरक्षित रखते हुए भविष्य की आपदाओं से होने वाली क्षति घटाई जा सकेगी।

चरण 3: निष्कर्ष केदारनाथ आपदा का संदेश है कि प्रकृति-सम्मत विकास, समय पर चेतावनी और प्रभावी आपदा-प्रबंधन से ही जीवन तथा पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है।

त्वरित सुझाव: आलेख में घटना का वर्णन करने के बाद कारण और व्यावहारिक उपाय जोड़ें; सनसनीखेज या अप्रमाणित दावे न करें।

अथवा

5(ख). 'बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम के बाद विषय का तर्कपूर्ण विस्तार किया जाता है।
- सुविधाओं और स्वास्थ्य का संबंध स्पष्ट करने के लिए दैनिक जीवन के उदाहरणों के साथ समस्या और समाधान दोनों देने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना पहले शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में आधुनिक सुविधाओं का उल्लेख करें। मुख्य भाग में घटती शारीरिक सक्रियता, असंतुलित भोजन, अनियमित नींद तथा मानसिक तनाव समझाएँ। अंतिम अनुच्छेद में नियमित व्यायाम और संतुलित जीवनचर्या का संदेश दें। सुविधाओं का उपयोग उपयोगकर्ता की जीवनशैली से जोड़कर विवेचन करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य

लेखक : अजय कुमार

आज घर से कार्यालय तक अनेक काम मशीनों और तकनीक की सहायता से आसानी से हो जाते हैं। वाहन दूरी घटाते हैं, मोबाइल संचार को सरल बनाता है और घरेलू उपकरण श्रम बचाते हैं। इन सुविधाओं ने जीवन को आरामदायक बनाया है, लेकिन इनके बीच हमारी शारीरिक सक्रियता लगातार कम होती जा रही है। समय बचाने के बावजूद स्वस्थ रहने के लिए समय निकालना कठिन लगने लगा है।

थोड़ी दूरी के लिए भी वाहन का प्रयोग, घंटों कुर्सी पर बैठना और खाली समय में स्क्रीन देखते रहना दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। इसके साथ तला-भुना भोजन, अनियमित खानपान और देर तक जागना शरीर पर अतिरिक्त बोझ डालते हैं। शारीरिक निष्क्रियता और असंतुलित आहार मोटापे तथा जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों का खतरा बढ़ाते हैं। लगातार संदेशों और काम के दबाव से मन को भी पर्याप्त विश्राम नहीं मिलता।

इस स्थिति के लिए सुविधाओं को पूरी तरह दोष देना उचित नहीं है। यही तकनीक उपचार, स्वास्थ्य-जागरूकता और समय के बेहतर प्रबंधन में सहायक भी है। समस्या तब बढ़ती है जब आराम हमारी आदत बन जाता है और सुविधाएँ नियमित श्रम का स्थान ले लेती हैं। इसलिए विवेकपूर्ण उपयोग और आत्मानुशासन आवश्यक हैं।

हमें प्रतिदिन पैदल चलने, व्यायाम करने और खेलकूद के लिए समय निश्चित करना चाहिए। संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद तथा काम के बीच छोटे सक्रिय विराम स्वास्थ्य की रक्षा में सहायक हैं। परिवार में भी बातचीत और सामूहिक गतिविधियों को स्थान देना चाहिए। सच्ची प्रगति वही है जिसमें सुविधाओं के साथ शरीर की स्फूर्ति और मन की प्रसन्नता भी बढ़े।

चरण 3: निष्कर्ष आधुनिक सुविधाओं का विवेकपूर्ण उपयोग और सक्रिय, संतुलित जीवनचर्या साथ-साथ अपनाकर ही आराम तथा अच्छे स्वास्थ्य का संतुलन बनाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: विषय के दोनों पक्ष स्पष्ट करें: सुविधाओं का लाभ बताएँ, फिर निष्क्रिय जीवनशैली की समस्या और ठोस उपाय प्रस्तुत करें।

6. 'वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा का प्रश्न' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर में किसी सामाजिक विषय का मानवीय, रोचक और संवेदनशील चित्रण किया जाता है।
- आकर्षक शीर्षक, प्रभावपूर्ण आरंभ, समस्या का विस्तार और सार्थक समापन इसके प्रमुख अंग हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना शीर्षक में बुजुर्गों की सुरक्षा और सम्मान का भाव उभरे। आरंभ में उनके दैनिक जीवन की स्थिति दिखाएँ। फिर अकेलेपन, आर्थिक असुरक्षा और अपराध की समस्या पर विचार करते हुए परिवार, पड़ोस और प्रशासन की भूमिका स्पष्ट करें। काल्पनिक आँकड़े अथवा किसी अनाम सर्वेक्षण के दावे जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: मॉडल फीचर सुरक्षित हों वे हाथ, जिन्होंने हमें सँभाला

लेखक : अजय

दरवाजे पर बजती घंटी सुनकर बुजुर्ग माँ ठिठक जाती हैं। घर में कोई दूसरा नहीं है। बाहर खड़े व्यक्ति की पहचान कैसे करें? जीवन भर परिवार को सुरक्षा देने वाले अनेक वरिष्ठ नागरिक आज स्वयं असुरक्षा अनुभव करते हैं। यह दृश्य हमारे समाज से एक कठिन प्रश्न पूछता है।

बढ़ते शहरीकरण और काम की मजबूरियों के कारण परिवारों के सदस्य अलग-अलग शहरों में रहने लगे हैं। पीछे रह गए बुजुर्गों के लिए बीमारी, अकेलापन और घरेलू काम भी चुनौती बन जाते हैं। उनकी बचत पर निगाह रखने वाले ठग कभी फोन पर विश्वास जीतते हैं, तो कभी सहायता का बहाना बनाकर घर में प्रवेश करते हैं। कई बुजुर्ग अपनों की उपेक्षा और आर्थिक दबाव भी सहते हैं। उनकी चुप्पी को संतोष समझ लेना हमारी भूल है।

सुरक्षा का अर्थ केवल ताला और चौकीदार नहीं है। नियमित बातचीत, सम्मानजनक व्यवहार और आवश्यकता पड़ने पर तुरंत मदद भी उतनी ही जरूरी है। परिवार को बुजुर्गों के स्वास्थ्य, खर्च और संपर्क के साधनों की व्यवस्था करनी चाहिए। पड़ोसी हालचाल पूछें और आपात स्थिति में सहायता के लिए उपलब्ध रहें। बुजुर्गों को अनजान व्यक्तियों से बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी साझा न करने और मदद के विश्वसनीय माध्यम पहचानने की जानकारी भी मिलनी चाहिए।

स्थानीय प्रशासन की सहायता व्यवस्था सुलभ हो और शिकायतों पर संवेदनशील कार्रवाई की जाए। सामुदायिक गतिविधियाँ उन्हें साथ और सक्रियता दे सकती हैं। उनकी इच्छा सुने बिना उनके जीवन का हर निर्णय कर देना भी उचित नहीं है।

वरिष्ठ नागरिक बोझ नहीं, अनुभव की जीवित धरोहर हैं। उन्हें सुरक्षित जीवन देना किसी उपकार का नाम नहीं; यह उस समाज की जिम्मेदारी है जिसे उन्होंने अपने श्रम और स्नेह से बनाया है।

चरण 3: निष्कर्ष फीचर वरिष्ठ नागरिकों की असुरक्षा को मानवीय प्रसंग से सामने लाता है और सुरक्षा को सहायता, सम्मान तथा सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: फीचर को केवल उपायों की सूची न बनाएँ; आरंभ में जीवन का छोटा दृश्य और अंत में विषय का मानवीय संदेश दें।

अथवा

6. 'प्रगति की दौड़ में उपेक्षित है किसान' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर तथ्यपरक सामाजिक विचार को रोचक प्रस्तुति और मानवीय संवेदना के साथ जोड़ता है।
- किसान की उपेक्षा बताते समय उसके श्रम, कठिनाइयों और सुधार की जरूरतों के बीच संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना आकर्षक शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। खेत और किसान के जीवन के दृश्य से आरंभ करें। विकास में खेती के योगदान के बाद सिंचाई, लागत, बाजार और आय की अनिश्चितता समझाएँ। समापन में किसान को विकास का सम्मानित सहभागी बनाने की जरूरत रखें। अप्रमाणित आँकड़ों से बचें।

चरण 2: मॉडल फीचर चमकते शहरों के पीछे धुँधलाता किसान

लेखक : अजय

भोर का उजाला अभी पूरी तरह फैला भी नहीं है। किसान खेत में पहुँच चुका है। उसकी हथेलियों की लकीरों में मिट्टी भरी है और आँखों में अगली फसल की आशा। उधर शहर की ऊँची इमारतें प्रगति की कहानी कह रही हैं। पर उस कहानी में हमें अन्न देने वाले किसान की आवाज कितनी सुनाई देती है?

किसान का श्रम केवल उसके परिवार का पेट नहीं भरता। हमारी थाली और कृषि पर निर्भर अनेक काम उसी से चलते हैं। फिर भी खेती में किया गया परिश्रम निश्चित आय की गारंटी नहीं देता। कभी कम वर्षा, कभी अतिवृष्टि और कभी फसल का रोग उसकी आशाओं को चोट पहुँचाता है। बीज, खाद और सिंचाई का खर्च जुटाने के बाद भी उसे उपज का उचित मूल्य मिलेगा या नहीं, यह चिंता बनी रहती है।

सड़कें और बाजार बढ़ने को विकास कहा जाता है; किंतु यदि किसान अपनी उपज सुरक्षित न रख सके और मजबूरी में बेच दे, तो उस

विकास का लाभ अधूरा है। छोटे किसान के पास जानकारी, भंडारण और बाजार तक पहुँच के साधन सीमित हो सकते हैं। कर्ज की चिंता उसके परिवार की पढ़ाई और स्वास्थ्य पर भी असर डालती है। चमकदार विज्ञापनों के बीच यह मौन संघर्ष प्रायः ओझल हो जाता है।

स्थिति बदलने के लिए भरोसेमंद सिंचाई, उपयुक्त कृषि सलाह, सुलभ ऋण, भंडारण और पारदर्शी विपणन की जरूरत है। किसान को उसकी मेहनत का न्यायपूर्ण प्रतिफल मिले और योजनाओं तक उसकी वास्तविक पहुँच बने। गाँव में शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा भी विकास का अनिवार्य हिस्सा होनी चाहिए।

प्रगति की दौड़ तभी सार्थक होगी जब खेत में काम करता व्यक्ति पीछे न छूटे। अन्नदाता के श्रम का सम्मान भाषणों से आगे बढ़कर उसके जीवन की स्थिरता और गरिमा में दिखाई देना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष यह फीचर विकास और किसान की उपेक्षा के विरोधाभास को उभारकर न्यायपूर्ण आय, सुविधाओं और सम्मान की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: किसान की समस्या लिखते समय खेत के दृश्य से शुरुआत करें और हर कठिनाई को उसके जीवन पर पड़ने वाले असर से जोड़ें।

7. प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचेन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज एक धागे के सहारे । [8 अंक]

7(क). 'वे अपने साथ लाते हैं कपास' – 'वे' कौन हैं ? साथ में कपास लाने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों की उन्मुक्त चंचलता और रोमांच का चित्रण है।
- कपास की कोमलता बालस्वभाव की सहजता तथा निष्कपटता का प्रतीक है।

चरण 1: सर्वनाम का संदर्भ पहचानना यहाँ 'वे' से आशय पतंग उड़ाने और लूटने वाले बच्चों से है। आगे आए 'बेचैन पैरों', बेसुध दौड़ने और छतों के किनारों तक पहुँचने के प्रसंग इसी बालसमूह की उत्साहपूर्ण गतिविधियों को सामने लाते हैं। अतः इस सर्वनाम का संबंध बच्चों से ही है।

चरण 2: कपास का सांकेतिक आशय 'अपने साथ कपास लाने' का अर्थ जन्म लेते समय सचमुच कपास साथ लाना नहीं है। कपास की नरमी बच्चों की कोमलता, मासूमियत और निश्छल स्वभाव का बिंब है। वे जन्म से ही सहज, निर्मल और कोमल होते हैं। उनकी इसी सहजता के कारण खेल के दौरान कठोर छतें भी उन्हें नरम प्रतीत होती हैं। कवि उनके बालमन की विशेषता को ठोस वस्तु के माध्यम से अनुभवगम्य बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वे' पतंग के खेल में मग्न बच्चे हैं। कपास साथ लाने से तात्पर्य उनके जन्मजात कोमल, मासूम और निष्कपट स्वभाव से है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताते समय पहले उसकी वास्तविक विशेषता पहचानें; यहाँ कपास की नरमी को बच्चों के स्वभाव से जोड़ें।

7(ख). पतंग लूटते बच्चों की तुलना डाल से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में समान गुण के आधार पर दो वस्तुओं की तुलना होती है।
- यहाँ डाल का लचीलापन बच्चों के शरीर और उनकी खेलती हुई गति की समान विशेषता है।

चरण 1: समान गुण पहचानना कवि ने बच्चों की तुलना पेड़ की डाल से उसके लचीलेपन के कारण की है। पद्यांश में 'डाल की तरह लचीले वेग से' कहा गया है। जैसे डाल झुकती और लहराती है, वैसे ही बच्चों के शरीर खेलते समय सहज रूप से मुड़ते और झुकते हैं।

चरण 2: खेल की गति से संबंध स्पष्ट करना पतंग के पीछे दौड़ते बच्चे उत्साह में पेंग भरते, उछलते और अपनी दिशा बदलते हैं। उनके शरीर में अकड़ या जड़ता नहीं, बल्कि फुरती और लचक है। वे इसी लचीली गति से छतों के खतरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं। डाल की उपमा उनकी गति को दृश्य रूप देती है और बालसुलभ चपलता को सजीव बनाती है। तुलना का आधार पेड़ से उनका संबंध नहीं, उनके शरीर और गति का लचीलापन है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों के लचीले शरीर तथा उछलती, झुकती और फुर्तीली गति के कारण उनकी तुलना डाल से की गई है।

त्वरित सुझाव: उपमा का उत्तर लिखते समय केवल दोनों वस्तुओं के नाम न दें; वह समान गुण भी स्पष्ट करें जिसके कारण तुलना हुई है।

7(ग). दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों का उत्साह आसपास के पूरे वातावरण को जीवंत बनाता है।
- मृदंग का बिंब लय, ध्वनि और आनंद की अनुभूति कराता है।

चरण 1: बिंब का संदर्भ समझना बच्चे पतंगों के पीछे 'बेसुध' होकर दौड़ते हैं। उनकी दौड़, उछलकूद और चहलपहल चारों ओर फैलती है। कवि ने इसी उल्लासपूर्ण हलचल को दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने के रूप में व्यक्त किया है। दिशाएँ यहाँ खेल के विस्तृत परिवेश का संकेत हैं।

चरण 2: आशय स्पष्ट करना मृदंग बजने पर वातावरण लय और ध्वनि से भर उठता है। उसी प्रकार बच्चों की उत्साहभरी गतिविधियाँ, पदचाप और किलकारियाँ आसपास को आनंदमय बना देती हैं। ऐसा लगता है कि उनके उल्लास में चारों दिशाएँ भी झंकृत हो उठी हैं। कथन का अर्थ सचमुच दिशाओं को किसी वाद्य की तरह बजाना नहीं, बल्कि बच्चों के खेल से पूरे वातावरण का लयमय और जीवंत हो जाना है। इसमें उनकी निर्बाध ऊर्जा का प्रभाव व्यक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि बच्चों की दौड़, उछलकूद और आनंदभरी चहलपहल से चारों दिशाएँ मृदंग की तरह झंकृत तथा वातावरण उल्लासमय हो उठता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे बिंबों में वस्तु का शाब्दिक अर्थ लेने के बजाय उसकी अनुभूति पहचानें; मृदंग यहाँ लय, गूँज और उल्लास जगाता है।

7(घ). छतों के किनारों से गिरने से उन्हें कौन बचाता है और कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में बच्चों के उत्साह और सहज संतुलन को उनके शरीर के संगीत के रूप में व्यक्त किया गया है।
- पतंग की ऊँचाई में तन्मयता बच्चों की गतिविधियों को लय देती है; कथन का आशय भावात्मक है।

चरण 1: रक्षक शक्ति पहचानिए छतों के खतरनाक किनारों पर पहुँचने पर बच्चों को उनके अपने रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है। इसका आशय उनके शरीर की स्फूर्ति, लचीलापन, अंगों की तालमेलपूर्ण गति और सहज संतुलन से है। वे खेल के उत्साह में बेसुध दिखाई देते हैं, फिर भी उनका सक्रिय शरीर उन्हें सँभालता है।

चरण 2: बचने की प्रक्रिया समझिए पतंग उड़ाते समय बच्चों की दृष्टि आकाश में उड़ती पतंग पर और हाथ उसकी डोर पर केंद्रित रहते हैं। पतंग की धड़कती ऊँचाइयाँ मानो उन्हें अपने साथ थाम लेती हैं। यह कल्पनापूर्ण अभिव्यक्ति उनके रोमांच और शारीरिक लय का संकेत है; पतंग की डोर सचमुच उनके शरीर का भार उठाती है, ऐसा इसका अर्थ नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों को उनके रोमांचित शरीर की लय, स्फूर्ति और संतुलन बचाते हैं। पतंग की ऊँचाई तथा डोर से जुड़ी तन्मयता उनके इस अनुभव को तीव्र करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शरीर के संगीत का अर्थ शारीरिक लय और संतुलन स्पष्ट करें।

अथवा

7. प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी । [8 अंक]

7(क). कवि ने चाँद का टुकड़ा किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चाँद का टुकड़ा बच्चे के सौंदर्य और प्रियता का बिंब है।
- उत्तर में रूपकात्मक संबोधन का संबंध माँ की गोद में झूलते शिशु से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: संबोधित पात्र पहचानिए कवि ने माँ की गोद में लिए हुए छोटे बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहा है। आँगन में खड़ी माँ उसे अपने हाथों पर झुलाती है और बीच-बीच में हवा में उछालकर फिर सँभाल लेती है। उसके खिलखिलाने का उल्लेख भी स्पष्ट करता है कि यह संबोधन शिशु के लिए है।

चरण 2: तुलना का कारण बताइए नन्हा बच्चा चाँद की तरह सुंदर, कोमल, निष्कलुष और मन को आनंद देने वाला है। उसकी मनोहर छवि और निश्छल हँसी माँ के जीवन को सुख से भर देती है। चाँद का टुकड़ा कहना उसके प्रति स्नेह और उसकी अनुपम प्रियता प्रकट करता है। यह वास्तविक चाँद के किसी खंड का वर्णन नहीं, बच्चे के मोहक रूप की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ की गोद में झूलता सुंदर, भोला और प्यारा शिशु ही चाँद का टुकड़ा है। उसके मनोहर रूप और आनंददायी उपस्थिति के कारण कवि ने यह संबोधन दिया है।

त्वरित सुझाव: चाँद का टुकड़ा का अर्थ बताते समय बच्चा और उसके सौंदर्य का कारण दोनों लिखें।

7(ख). माँ के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गोद-भरी पद माँ की गोद में शिशु होने का प्रत्यक्ष संकेत देता है।
- यह अभिव्यक्ति मातृत्व से मिली पूर्णता और वात्सल्य का भाव भी व्यक्त करती है।

चरण 1: प्रयुक्त शब्द चुनिए कवि ने माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग किया है। कविता में वह आँगन में खड़ी होकर अपने बच्चे को हाथों पर झुला रही है। उसकी गोद में उसका शिशु है, इसलिए यह शब्द उसके उस समय के रूप और स्थिति का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है।

चरण 2: शब्द के भाव का विवेचन कीजिए गोद-भरी केवल शिशु को गोद में लेने की सूचना नहीं देता। इससे माँ का वात्सल्य, मातृत्व का गौरव और बच्चे को पाकर मिला सुख भी झलकता है। वह बच्चे को बार-बार हवा में उछालती और सँभालती है; उसकी गतिविधि में स्नेह तथा आनंद है। बच्चे की उपस्थिति ने उसकी गोद और उसके भाव-जगत दोनों को भर दिया है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के लिए गोद-भरी शब्द आया है, क्योंकि उसकी गोद में बच्चा है और उसका हृदय मातृत्व के सुख तथा वात्सल्य से भरा हुआ है।

त्वरित सुझाव: शब्द का प्रत्यक्ष अर्थ और उससे व्यक्त मातृत्व-सुख अलग-अलग स्पष्ट करें।

7(ग). बच्चे की हँसी का कारण क्या है ? उसके गूँजने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बच्चे की हँसी माँ के साथ खेलते समय मिलने वाले आनंद की अभिव्यक्ति है।
- हँसी का गूँजना आँगन में फैलती ध्वनि और आनंदमय वातावरण का बोध कराता है।

चरण 1: हँसी का कारण बताइए माँ बच्चे को अपने हाथों पर झुलाती है और रह-रहकर हवा में उछालती है। इस खेल में ऊपर उठने और फिर माँ के हाथों में लौट आने की चंचल गति बच्चे को आनंद देती है। माँ का स्नेहपूर्ण साथ पाकर वह प्रसन्न होता है और खिलखिलाकर हँस पड़ता है।

चरण 2: गूँजने का तात्पर्य समझिए बच्चे की खिलखिलाहट पूरे आँगन में फैल जाती है और आसपास का वातावरण उल्लास से भर उठता है। गूँज उठती है में उसकी हँसी की खुली, स्पष्ट और आनंदपूर्ण ध्वनि उभरती है। इससे माँ और शिशु के खेल का सजीव दृश्य बनता है तथा पाठक भी उस निश्छल खुशी का अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के झुलाने और हवा में उछालने के खेल से बच्चा हँसता है। उसकी हँसी के गूँजने का अर्थ उसकी खिलखिलाहट से पूरे आँगन का आनंदमय हो उठना है।

त्वरित सुझाव: कारण में माँ का खेल और गूँज के अर्थ में आँगन का उल्लास लिखना न भूलें।

7(घ). काव्यांश के भाव को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध और सहज घरेलू आनंद का चित्र है।
- भावचित्र में आँगन, माँ का झुलाना और बच्चे की हँसी मुख्य आधार हैं।

चरण 1: दृश्य के मुख्य तत्व चुनिए आँगन में एक माँ अपने सुंदर नन्हे बच्चे को गोद में लिए खड़ी है। बच्चा चाँद के टुकड़े जैसा प्यारा दिखाई देता है। माँ उसे हाथों पर झुलाती है और बीच-बीच में हवा में उछालकर फिर अपने हाथों में लेती है। यह सामान्य घरेलू दृश्य मातृस्नेह के कारण अत्यंत मनोहर बन गया है।

चरण 2: भावचित्र अपने शब्दों में लिखिए माँ के स्नेहभरे खेल से बच्चा आनंदित होकर खिलखिला उठता है। उसकी निश्छल हँसी पूरे आँगन में गूँजती है और घर का वातावरण खुशी से भर जाता है। माँ की ममता तथा बच्चे का सहज उल्लास एक-दूसरे को पूर्ण करते हैं। कवि ने इस छोटे-से प्रसंग के माध्यम से वात्सल्य, आत्मीयता और जीवन के निर्मल आनंद की सुंदर झाँकी प्रस्तुत की है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में बच्चे को झुलाती माँ और खिलखिलाते शिशु का वात्सल्यपूर्ण चित्र है। उनकी आत्मीय क्रीड़ा से आँगन में प्रेम और उल्लास फैल जाता है।

त्वरित सुझाव: भावचित्र को पद्यांश की गतिविधियों से जोड़ें और अंत में वात्सल्य का भाव स्पष्ट करें।

---

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ
तुलसी सरनाम गुलामु है राम कौ जाकौ रुचै सो कहै कछु ओऊ
मांगिकै खैबो, मसीत कौ सोइबो, लैबो को एकु न दैबे को दोऊ [6 अंक]

8(क). काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कवि के विचार, अनुभूति और जीवन-दृष्टि की व्याख्या की जाती है।
- पद्यांश में रामभक्ति, जातिगत अहंकार का निषेध तथा निर्लिप्त जीवन की भावना प्रमुख हैं।

चरण 1: सामाजिक दृष्टि समझिए तुलसीदास कहते हैं कि लोग उन्हें धूर्त, अवधूत, राजपूत अथवा जुलाहा जो चाहें कहें; वे इन संबोधनों से विचलित नहीं होते। उन्हें किसी से वैवाहिक संबंध जोड़ना नहीं है, इसलिए उनकी जाति के कारण किसी दूसरे की जाति बिगड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। इन कथनों में जातिगत भेदभाव के प्रति व्यंग्य और सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त स्वाभिमान है।

चरण 2: भक्ति और निर्लिप्तता स्पष्ट कीजिए कवि की वास्तविक पहचान राम के सेवक की है। वे भिक्षा से भोजन और मस्जिद में विश्राम करके भी संतुष्ट रह सकते हैं। मस्जिद में सोने की बात धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठने का संकेत है। किसी से लेन-देन की अपेक्षा न रखकर वे स्वतंत्र, निस्पृह और आत्मसम्मानपूर्ण जीवन को महत्त्व देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य अनन्य रामभक्ति, स्वाभिमान, जाति-पाँति के विरोध और निर्लिप्त जीवन-दृष्टि में है। कवि लोकनिंदा से अप्रभावित रहकर मानवीय समता का पक्ष लेते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में केवल कथानक न लिखें; रामभक्ति, समता और स्वाभिमान को जोड़ें।

8(ख). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक ही व्यंजन की आवृत्ति से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य को अनुप्रास कहते हैं।
- उदाहरण के साथ आवृत्त व्यंजन बताना आवश्यक है; केवल पंक्ति उद्धृत करना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पहला उदाहरण स्पष्ट कीजिए काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब में ब व्यंजन की आवृत्ति बेटी, बेटा और ब्याहब शब्दों में हुई है। इन समीपवर्ती शब्दों में एक ही व्यंजन बार-बार आने से कथन में ध्वनिगत समानता और लय उत्पन्न होती है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। यह उदाहरण कवि के वैवाहिक संबंधों से निर्लिप्त होने के कथन से लिया गया है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण स्पष्ट कीजिए काहू की जाति बिगार न सोऊ में क व्यंजन काहू और की शब्दों में दोहराया गया है। समान व्यंजन की यह आवृत्ति पंक्ति को श्रुतिमधुर बनाती है, अतः इसमें भी अनुप्रास है। दोनों उदाहरणों में ध्यान शब्दों के अर्थ पर ही नहीं, समान व्यंजन की पुनरावृत्ति पर है; यही अलंकार की पहचान का आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष बेटी, बेटा, ब्याहब में ब व्यंजन तथा काहू की में क व्यंजन की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है। दोनों स्थानों पर ध्वनि की समानता कथन में लय लाती है।

त्वरित सुझाव: उदाहरण लिखकर आवृत्त व्यंजन अलग से बताएँ; बेटी, बेटा, ब्याहब में ब पहचानें।

8(ग). काव्यांश के भाषा-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा-सौंदर्य में शब्दावली, लोकप्रयोग, ध्वनि और कथन-शैली का विवेचन किया जाता है।
- कवित्त में ब्रजभाषा के साथ लोकजीवन से जुड़े शब्द और निर्भीक व्यंग्यात्मक स्वर हैं।

चरण 1: भाषा और शब्दावली पहचानिए काव्यांश की भाषा ब्रजभाषा है। कहौ, काहू, सों, कौ, खैबो और सोइवो जैसे रूप उसे लोकबोली की सहजता देते हैं। गुलामु और मसीत जैसे प्रचलित अरबी-फारसी मूल के शब्द भी स्वाभाविक ढंग से घुल गए हैं। इस मिश्रित लोकप्रचलित शब्दावली से कवि का कथन जनसामान्य के निकट और प्रभावशाली बनता है।

चरण 2: शैली और ध्वनि-सौंदर्य बताइए बार-बार कहौ कहना कवि की निर्भीक चुनौती और लोकनिंदा के प्रति उपेक्षा व्यक्त करता है। जाति बिगारने के कथन में सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्य है। लैबो को एकु न दैबे को दोऊ जैसी लोकोक्तिपरक अभिव्यक्ति निर्लिप्तता को संक्षेप में स्पष्ट करती है। अनुप्रास, तुक और प्रवाहपूर्ण लय से कवित्त की भाषा ओजस्वी तथा स्मरणीय बन गई है।

चरण 3: निष्कर्ष ब्रजभाषा की सहजता, लोकप्रचलित शब्दावली, लोकोक्तिपरक कथन और व्यंग्यपूर्ण निर्भीक शैली काव्यांश की विशेषताएँ हैं। अनुप्रास तथा लय इसके भाषा-सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा के नाम के साथ दो शब्दरूप और शैली की विशेषता का उदाहरण अवश्य दें।

अथवा

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अन्तर में पा लूँ मैं,
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है । [6 अंक]

8(क). काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में काव्यांश की केंद्रीय अनुभूति, भावों की गहराई और उनके अंतर्विरोध को स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ प्रिय का सर्वव्यापी प्रभाव उजाले का और उसे भूलने की स्थिति गहरे अंधकार का प्रतीक है।

चरण 1: प्रिय के प्रभाव की व्यापकता कवि का शरीर, चेहरा और अंतर्मन प्रिय के प्रभाव से पूरी तरह घिरे हुए हैं। प्रिय का स्नेह उसके जीवन को सुंदर उजाला देता है, पर अब इसी व्यापक प्रभाव में निरंतर रहना उसके लिए असह्य हो गया है। इस प्रकार आत्मीयता और उससे उपजी व्याकुलता साथ-साथ व्यक्त हुई हैं।

चरण 2: विस्मृति की पीड़ा स्वीकारने की इच्छा कवि प्रिय को भूलने से उत्पन्न दक्षिण ध्रुव जैसी गहन अंधकारमय स्थिति को भी सहना चाहता है। वह उस अंधकार को केवल बाहर नहीं, अपने पूरे अस्तित्व में अनुभव करने और उसमें नहा लेने को तैयार है। इससे प्रिय के प्रभाव से मुक्त होने की तीव्र आकांक्षा तथा उस मुक्ति की पीड़ा सहने का संकल्प उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य प्रिय के रमणीय किंतु असह्य प्रभाव और उससे छुटकारा पाने के लिए घोर विस्मृति का दुःख स्वीकारने की मार्मिक इच्छा में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले प्रिय के व्यापक प्रभाव को स्पष्ट करें, फिर उजाले से व्याकुल होकर अंधकार स्वीकारने की विरोधाभासी इच्छा बताएँ।

8(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा की विशेषता को उसी काव्यांश के शब्दों और उनके प्रभाव से प्रमाणित करना चाहिए।
- इस अंश में तत्सम शब्दावली और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भावों की गंभीरता तथा तीव्रता बढ़ाती हैं।

चरण 1: तत्समप्रधान, गंभीर शब्दावली भाषा खड़ी बोली की है, जिसमें दक्षिण ध्रुवी, अंधकार, अमावस्या, अन्तर, परिवेष्टित, आच्छादित और रमणीय जैसे तत्सम शब्दों की प्रधानता है। परिवेष्टित और आच्छादित जैसे शब्द प्रिय के प्रभाव से चारों ओर घिर जाने की अनुभूति को सघन बनाते हैं। इस शब्दावली से भाषा में गंभीरता और भावाभिव्यक्ति में गहराई आती है।

चरण 2: प्रतीकात्मक और बिंबात्मक भाषा अंधकार-अमावस्या प्रिय को भूलने से उपजी शून्यता तथा उजेला प्रिय के स्नेहमय प्रभाव का प्रतीक है। अंधकार में नहा लेने का प्रयोग एक अमूर्त मानसिक अनुभव को दृश्य तथा स्पर्शनीय बिंब में बदल देता है। इस प्रकार सीधे कथन के स्थान पर प्रतीकों और बिंबों से कवि की जटिल मनःस्थिति प्रभावी ढंग से व्यक्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश की भाषा की दो मुख्य विशेषताएँ तत्समप्रधान गंभीर शब्दावली तथा प्रतीकात्मक-बिंबात्मक अभिव्यक्ति हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की प्रत्येक विशेषता के साथ काव्यांश का एक शब्द या प्रयोग दें और बताएँ कि उससे भाव कैसे प्रभावी हुआ है।

8(ग). 'अमावस्या' और 'उजेला' के विशेषणों का प्रयोग-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण संज्ञा की अनुभूति को अधिक स्पष्ट और तीव्र बनाते हैं; उनका सौंदर्य प्रसंग के अर्थ से खुलता है।
- अमावस्या और उजेला क्रमशः विस्मृति के अंधकार तथा प्रिय के स्नेहमय प्रभाव के प्रतीक हैं।

चरण 1: अमावस्या के विशेषण का प्रभाव अमावस्या के साथ दक्षिण ध्रुवी अंधकार का प्रयोग गहरे, व्यापक और लंबे समय तक छाए रहने वाले अँधेरे का बोध कराता है। दक्षिण ध्रुव का संकेत सामान्य रात से कहीं अधिक सघन अंधकार की कल्पना जगाता है। प्रिय को भूलने पर कवि जिस आंतरिक रिक्तता और दुःख का अनुभव करेगा, उसकी तीव्रता इस प्रयोग से मूर्त हो जाती है।

चरण 2: उजेले के विशेषण का प्रभाव उजेले के लिए रमणीय विशेषण आया है। इससे प्रिय के स्नेह, स्मृति और प्रभाव की सुंदरता तथा आकर्षण प्रकट होते हैं। फिर भी कवि कहता है कि यह उजाला अब सहा नहीं जाता। सुंदर प्रकाश का असह्य हो उठना उसकी जटिल मनःस्थिति को उभारता है: वह प्रिय के प्रभाव का सौंदर्य जानता है, फिर भी उससे मुक्त होना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या की सघनता बढ़ाता है और रमणीय उजेले के आकर्षण को उभारता है। दोनों का विरोध कवि की मुक्ति-कामना को मार्मिक बनाता है।

त्वरित सुझाव: केवल विशेषण गिनाने के बजाय अमावस्या की सघनता और उजेले के आकर्षण को कवि की मनःस्थिति से जोड़ें।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की आत्मपरिचय कविता में कवि के निजी जीवन-दर्शन और संसार से उसके संबंध की अभिव्यक्ति है।
- इसमें प्रेम, संवेदना, सुख-दुःख की स्वीकृति और बाहरी अपेक्षाओं के बीच अपने अंतर्मन के प्रति निष्ठा प्रमुख हैं।

चरण 1: संसार से संबंध और अपनी स्वतंत्रता कवि संसार की जिम्मेदारियों और अनुभवों से अपरिचित नहीं है, फिर भी उसका जीवन केवल सांसारिक गणना से संचालित नहीं होता। वह जगजीवन का भार लिए हुए भी जीवन में प्यार सँजोकर चलता है। समाज की अपेक्षाएँ और उसका अपना मन कई बार मेल नहीं खाते, पर वह अपने हृदय की सहजता और प्रेममय दृष्टि नहीं छोड़ता। इसीलिए उसका आत्मपरिचय केवल व्यक्तिगत विवरण नहीं, जीवन जीने की एक स्वतंत्र शैली का परिचय है।

चरण 2: प्रेम और सुख-दुःख का समन्वय कवि के भीतर प्रेम, स्मृतियाँ और कोमल संवेदनाएँ जीवित हैं। वह सुख और दुःख को जीवन के जुड़े हुए अनुभव मानता है; पीड़ा उसे संवेदनहीन नहीं बनाती। उसके गीतों में रुदन और राग साथ उपस्थित हैं। अपनी आंतरिक अनुभूतियों को व्यक्त करके वह निजी वेदना को ऐसी मानवीय अनुभूति बनाता है जिससे दूसरे भी जुड़ सकें।

चरण 3: कविता का केंद्रीय जीवन-संदेश कविता का प्रतिपाद्य यह है कि मनुष्य संसार में रहते हुए प्रेम, मस्ती और अपने व्यक्तित्व की सहज स्वतंत्रता बचाए रखे। कवि बाहरी उपलब्धियों से अधिक हृदय की सच्चाई को महत्त्व देता है। उसका अपने भीतर मग्न रहना जीवन से पलायन नहीं, कठिनाइयों के बीच संवेदनशील और प्रेमपूर्ण बने रहने का ढंग है।

चरण 4: निष्कर्ष आत्मपरिचय प्रेम और संवेदना से समृद्ध, सुख-दुःख को अपनाने वाले तथा संसार के बीच अपनी आंतरिक स्वतंत्रता बनाए रखने वाले कवि का जीवन-दर्शन प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: प्रतिपाद्य लिखते समय प्रेम, सुख-दुःख और स्वतंत्र व्यक्तित्व को एक केंद्रीय जीवन-दृष्टि में जोड़ें; कवि की जीवनी न लिखें।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'कविता के बहाने' कविता की तुलना बच्चों से और तितलियों से क्यों की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में कविता की कल्पनाशीलता, आनंद और सीमाओं से परे जाने की शक्ति स्पष्ट की गई है।
- मूल कविता में चिड़िया, फूल और बच्चों के बिंब हैं। प्रश्न में उल्लिखित तितलियों से तुलना को यहाँ कविता के गुण समझाने वाली व्याख्यात्मक तुलना के रूप में लिया गया है।

चरण 1: प्रश्नानुसार तितलियों से व्याख्यात्मक तुलना तितली के रंग, उड़ान और चंचलता में सौंदर्य तथा स्वच्छंदता होती है। कविता भी कल्पना के सहारे विविध भावों और अनुभवों के रंग बिखेरती है तथा पाठक को आनंद देती है। इसलिए तितली कविता की रंगमय, सुंदर और मुक्त प्रकृति को समझाने का उपयुक्त माध्यम है। तितली का संसार प्राकृतिक रूप से सीमित होता है, जबकि कविता की कल्पना किसी एक स्थान या दृश्य में नहीं बँधती।

चरण 2: बच्चों से तुलना का आधार बच्चे खेलते समय अपने-पराए घर का भेद भूलकर सहज आत्मीयता से सबको जोड़ लेते हैं। कविता भी भाषा, स्थान और सामाजिक भेदों के पार जाकर मनुष्यों के बीच संबंध बनाती है। बच्चों का खेल निष्कपट आनंद और नई संभावनाओं का क्षेत्र है; इसी तरह कविता पूर्वनिर्धारित सीमाओं से बँधे बिना नया अनुभव रचती है। उसमें खेल की सहजता, कौतूहल और कल्पनाशीलता है।

चरण 3: तुलनाओं का व्यापक आशय तितली से की गई यह व्याख्यात्मक तुलना और कविता में बच्चों का बिंब कविता को केवल रंगीन या मनोरंजक नहीं बताते। वे उसकी निर्बंध सृजनशीलता तथा मानवीय विस्तार को स्पष्ट करती हैं। मूल कविता में चिड़िया की उड़ान, फूल के खिलने और बच्चों के खेल के माध्यम से कविता की असीम संभावनाएँ खुलती हैं। वह अलग-अलग मनुष्यों के अनुभवों को अपना बनाती है और पाठक की कल्पना को नए क्षेत्रों तक ले जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष तितलियों से तुलना कविता की सुंदरता, रंगमयता और स्वच्छंदता के कारण तथा बच्चों से तुलना उसकी सहजता, कल्पनाशीलता और भेद मिटाकर सबको जोड़ने की शक्ति के कारण की गई है।

त्वरित सुझाव: तितली के लिए रंग और उड़ान, बच्चों के लिए खेल और अपने-पराए का भेद मिटाना लिखें; फिर कविता की असीम संभावना बताएँ।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश में नारी समाज के प्रति तुलसीदास के दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की समीक्षा में कथन के प्रसंग और उसके भीतर उपस्थित सामाजिक दृष्टिकोण, दोनों का विवेचन आवश्यक है।
- लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम का कथन तत्कालीन पुरुषप्रधान मान्यता भी प्रकट करता है; इसे संपूर्ण नारी-समाज का सत्य नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: राम के कथन का प्रसंग लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम शोक से व्याकुल हो उठते हैं। उन्हें लगता है कि स्त्री के लिए उन्होंने प्रिय भाई को संकट में डाल दिया। वे नारी की हानि को भाई की हानि के समान बड़ी क्षति नहीं मानते। यह कथन लक्ष्मण के प्रति उनके गहरे प्रेम और उन्हें खो देने की आशंका से उत्पन्न असह्य दुःख के प्रसंग में आया है। इसलिए राम की तत्कालीन भावावस्था को समझना आवश्यक है।

चरण 2: नारी के प्रति व्यक्त असमान दृष्टि इस तुलना में भाई का संबंध अनुपम और नारी का स्थान अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण माना गया है। इससे उस समय की पुरुषप्रधान सामाजिक सोच प्रकट होती है जिसमें पत्नी के व्यक्तित्व और संबंध की गरिमा को पुरुष संबंधों के समान महत्त्व नहीं मिलता था। भाई-प्रेम व्यक्त करते हुए नारी को इस तरह कम आँकना न्यायसंगत नहीं है। शोक का प्रसंग कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट करता है, पर उससे उसका स्त्री-विषयक सामान्यीकरण उचित नहीं हो जाता।

चरण 3: संतुलित आलोचनात्मक निष्कर्ष आधुनिक समतामूलक दृष्टि से स्त्री स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा समान गरिमा की अधिकारी है। पत्नी और भाई के संबंध अलग हैं; एक को ऊँचा सिद्ध करने के लिए दूसरे का अवमूल्यन उचित नहीं। अतः काव्यांश में राम के भ्रातृप्रेम की मार्मिकता स्वीकार करते हुए नारी के प्रति व्यक्त संकीर्ण सामाजिक धारणा की आलोचना करनी चाहिए। इसी अंश के आधार पर कवि की समस्त रचनाओं की नारी-दृष्टि पर एकमात्र अंतिम निर्णय देना भी उचित नहीं होगा।

चरण 4: निष्कर्ष काव्यांश में नारी को भाई की अपेक्षा कम महत्त्व देने वाली तत्कालीन पुरुषप्रधान दृष्टि दिखाई देती है। राम के शोक का प्रसंग समझते हुए भी समानता और नारी-गरिमा के आधार पर इस दृष्टि की आलोचना उचित है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में पहले राम के शोक का प्रसंग दें, फिर नारी के अवमूल्यन की आलोचना करें; प्रसंग को कथन का औचित्य न बना दें।

---

10. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं । इस चिलकती धूप में इतना इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन – धूप, वर्षा, आँधी, लू – अपने आपमें सत्य नहीं हैं ? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है । अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था । क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है । शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है । गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था । मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है ! [8 अंक]

10(क). अवधूत किसे कहा जाता है ? शिरीष को अवधूत कहने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: अवधूत की पहचान अवधूत वह निर्लिप्त, फक्कड़ और मस्त व्यक्ति होता है जो बाहरी सुख-दुःख तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से विचलित नहीं होता। वह जीवन के प्रति अपनी सहजता और आंतरिक शांति बनाए रखता है। गद्यांश में इस शब्द का प्रयोग ऐसे ही अडिग किंतु संवेदनशील स्वभाव के लिए हुआ है।

चरण 2: शिरीष से संबंध शिरीष चिलचिलाती धूप, वर्षा, आँधी और लू के बीच भी सरस और कोमल बना रहता है। बाहरी कठोरता उसकी जीवंतता को नष्ट नहीं करती। वह वायुमंडल से रस खींचकर प्रतिकूलता में भी खिलता है; इसीलिए लेखक को उसमें पक्के अवधूत जैसी मस्ती और दृढ़ता दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष अवधूत बाहरी परिस्थितियों से अप्रभावित रहने वाला निर्लिप्त और मस्त व्यक्ति है। शिरीष की विपरीत मौसम में भी बनी रहने वाली सरसता, कोमलता और दृढ़ता के कारण उसे अवधूत कहा गया है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ लिखकर उसे शिरीष की विपरीत मौसम में बनी रहने वाली सरसता और दृढ़ता से जोड़ें।

10(ख). 'वह बूढ़ा' किसे कहा है ? वह देश की किन विषम परिस्थितियों में स्थिर रह सका था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: व्यक्ति की पहचान गद्यांश में देश के जिस बूढ़े व्यक्ति का उल्लेख है, वे महात्मा गांधी हैं। आगे लेखक स्वयं गांधी का नाम लेकर उन्हें शिरीष की तरह कोमल और कठोर बताता है। इससे संकेत का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और किसी अन्य वृद्ध व्यक्ति की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं रहती।

चरण 2: विषम परिस्थिति में स्थिरता देश मार-काट, आगजनी, लूट-पाट और रक्तपात के भयानक दौर से गुजरा था। ऐसी हिंसा और उथल-पुथल के बीच गांधीजी अपनी आंतरिक स्थिरता और मानवीय संवेदनशीलता बनाए रख सके। बाहरी बवंडर के होते हुए भी उनका करुण और दृढ़ स्वभाव नहीं बदला; इसी गुण के कारण लेखक उन्हें अवधूत कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वह बूढ़ा' महात्मा गांधी हैं। वे देश में फैली मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट और रक्तपात जैसी विषम परिस्थितियों के बीच भी शांत, संवेदनशील और दृढ़ रह सके थे।

त्वरित सुझाव: पहले महात्मा गांधी की पहचान लिखें, फिर मार-काट, अग्निदाह और लूट-पाट जैसी परिस्थितियाँ गिनाएँ।

10(ग). शिरीष को देखकर लेखक के मन में क्या प्रश्न उठता है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मन में उठने वाला प्रश्न शिरीष को देखकर लेखक पूछता है कि इतनी चिलचिलाती धूप और कठोर बाहरी परिवर्तनों के बीच वह इतना सरस कैसे बना रहता है। उसे यह भी आश्चर्य होता है कि धूप, वर्षा, आँधी और लू के वास्तविक प्रभावों के बावजूद कोई अपने भीतर इतनी स्थिरता कैसे बनाए रख सकता है।

चरण 2: प्रश्न उठने का कारण शिरीष की कोमलता और प्रतिकूल मौसम को सहने की शक्ति एक साथ देखकर लेखक विस्मित है। यह विरोधाभासी-सा मेल उसे गांधीजी की याद दिलाता है, जो देश की हिंसा और उथल-पुथल में भी स्थिर रहे थे। इसलिए वह दोनों की आंतरिक दृढ़ता का रहस्य जानना चाहता है और उसे उनका अवधूत स्वभाव इसका आधार लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि प्रचंड धूप और विपरीत परिस्थितियों में भी शिरीष इतना सरस तथा स्थिर कैसे रह पाता है। कठोर वातावरण में उसकी कोमलता और दृढ़ता का एक साथ बने रहना इस जिज्ञासा का कारण है।

त्वरित सुझाव: शिरीष इतना सरस कैसे रहता है, यह प्रश्न लिखें और प्रचंड धूप में उसकी कोमलता से उपजे आश्चर्य को स्पष्ट करें।

10(घ). शिरीष और गांधीजी के स्वभाव-साम्य को लेखक ने किस प्रकार प्रतिपादित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: शिरीष का दोहरा गुण शिरीष धूप, वर्षा, आँधी और लू जैसे कठोर परिवर्तनों को सहता है, फिर भी उसकी सरसता तथा कोमलता बनी रहती है। लेखक के अनुसार वह वायुमंडल से रस खींचता है। उसका कोमल होना दुर्बलता नहीं है; उसके भीतर प्रतिकूलता का सामना करने की कठोरता भी विद्यमान है।

चरण 2: गांधीजी से तुलना गांधीजी भी देश में मार-काट, आगजनी, लूट-पाट और रक्तपात के बीच स्थिर रहे। उनमें मनुष्यों के लिए कोमल संवेदना और संकट सहने की अडिग शक्ति साथ-साथ थीं। लेखक दोनों को अवधूत कहता है तथा वायुमंडल से रस खींचने की

समान अभिव्यक्ति से उनके जीवन-पोषक और अविचल स्वभाव का साम्य प्रतिपादित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष और गांधीजी दोनों बाहर से कोमल तथा भीतर से दृढ़ हैं। दोनों प्रतिकूल वातावरण में भी संवेदनशीलता और स्थिरता बनाए रखते हैं; लेखक ने इसी अवधूत स्वभाव के आधार पर उनका साम्य दिखाया है।

त्वरित सुझाव: तुलना में शिरीष और गांधीजी दोनों की कोमलता तथा प्रतिकूलता सहने की दृढ़ता के समान गुण लिखें।

अथवा

10. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अपीलहीन फ़ैसला हुआ कि चाहे उन दोनों में एक सच्चा हो चाहे दोनों झूठे; पर जब वे एक कोठरी से निकले, तब उनका पति-पत्नी के रूप में रहना ही कलियुग के दोष का परिमार्जन कर सकता है । अपमानित बालिका ने ओठ काटकर लहू निकाल लिया और माँ ने आग्नेय नेत्रों से गले पड़े दामाद को देखा । संबंध कुछ सुखकर नहीं हुआ, क्योंकि दामाद अब निश्चिंत होकर तीतर लड़ाता था और बेटी विवश क्रोध से जलती रहती थी । इतने यत्न से सँभाले हुए गाय-ढोर, खेती-बारी जब पारिवारिक द्वेष में ऐसे झुलस गए कि लगान अदा करना भी भारी हो गया, सुख से रहने की कौन कहे । अंत में एक बार लगान न पहुँचने पर ज़मींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा । यह अपमान तो उसकी कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक बन गया, अतः दूसरे ही दिन भक्तिन कमाई के विचार से शहर आ पहुँची । [8 अंक]

10(क). अपीलहीन फ़ैसला क्या था ? उसे 'अपीलहीन' क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: फैसले का आशय फैसला यह था कि बालिका और युवक में चाहे कोई एक सच बोल रहा हो या दोनों झूठ, एक कोठरी से निकलने के कारण उन्हें पति-पत्नी बनकर रहना होगा। उनके कथनों की सत्यता जाँचे बिना इस संबंध को अनिवार्य कर दिया गया। इसे कलियुग के दोष का परिमार्जन बताकर उचित ठहराया गया।

चरण 2: अपीलहीन कहने का कारण यह निर्णय अंतिम मान लिया गया था। अपमानित बालिका और उसकी माँ को इसके विरुद्ध अपनी बात मनवाने अथवा निर्णय बदलवाने का कोई अवसर नहीं दिया गया। बालिका का ओठ काटकर लहू निकाल लेना और माँ की क्रोधपूर्ण दृष्टि बताती है कि उनकी असहमति होते हुए भी फैसला उन पर थोप दिया गया था।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों को एक कोठरी से निकलने के कारण पति-पत्नी की तरह रहने का बाध्यकारी फैसला दिया गया। उनके लिए विरोध या पुनर्विचार का कोई अवसर न होने से इसे अपीलहीन कहा गया है।

त्वरित सुझाव: अपीलहीन फैसले में पति-पत्नी बनकर रहने की बाध्यता और उसके विरुद्ध सुनवाई का अवसर न होना स्पष्ट करें।

10(ख). इस घटना से भक्तिन की गृहस्थी पर क्या कुप्रभाव पड़ा ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: घर में अशांति जबरन बनाए गए इस संबंध से भक्तिन के परिवार का सुख नष्ट हो गया। दामाद निश्चिंत होकर तीतर लड़ाता

रहता था, जबकि बेटी विवश क्रोध से जलती रहती थी। इस प्रकार संबंध सहयोग और अपनत्व का आधार बनने के बजाय लगातार तनाव तथा पारिवारिक द्वेष का कारण बन गया।

चरण 2: गृहस्थी की हानि घर की कलह का असर गाय-ढोर और खेती-बारी पर पड़ा। भक्तिन ने जिन साधनों को बड़े यत्न से सँभाला था, वे अव्यवस्था और द्वेष में नष्ट होने लगे। आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गई कि लगान अदा करना भी कठिन हो गया। गद्यांश में सुख से रहने की बात तो दूर, बुनियादी देनदारी निभाना भारी पड़ने का उल्लेख है।

चरण 3: निष्कर्ष इस घटना से परिवार में द्वेष और अशांति बढ़ी, बेटी दुखी रही और दामाद निष्क्रिय बना रहा। गाय-ढोर तथा खेती-बारी की दशा बिगड़ने से गृहस्थी इतनी कमजोर हो गई कि लगान चुकाना भी कठिन हो गया।

त्वरित सुझाव: पारिवारिक द्वेष से गाय-ढोर तथा खेती-बारी की हानि को लगान अदा करने की कठिनाई से जोड़ें।

10(ग). उसकी कर्मठता पर लगा कलंक क्या था ? उसका परिणाम क्या हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कर्मठता पर लगा कलंक पारिवारिक द्वेष के कारण भक्तिन की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई थी। एक बार लगान समय पर न पहुँचने पर जमींदार ने उसे बुलाकर दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा। परिश्रमी भक्तिन के लिए यह दंड केवल शारीरिक कष्ट नहीं, बल्कि उसके श्रम और आत्मसम्मान का बड़ा अपमान था; इसी को कर्मठता पर कलंक कहा गया है।

चरण 2: अपमान का परिणाम भक्तिन इस अपमान को सहकर उसी स्थिति में पड़ी नहीं रही। उसने अपनी मेहनत से कमाई करने का निर्णय लिया और दूसरे ही दिन शहर आ पहुँची। गद्यांश में उसके शहर आने का उद्देश्य स्पष्टतः कमाई बताया गया है। इस निर्णय से उसकी कर्मशीलता तथा अपने पैरों पर खड़े होने की दृढ़ इच्छा सामने आती है।

चरण 3: निष्कर्ष लगान न दे पाने पर जमींदार द्वारा दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा जाना उसकी कर्मठता पर लगा कलंक था। इस अपमान के फलस्वरूप वह अगले ही दिन कमाई के उद्देश्य से शहर चली आई।

त्वरित सुझाव: कड़ी धूप में खड़े किए जाने के अपमान और अगले दिन कमाई के लिए शहर पहुँचने का क्रम लिखें।

10(घ). 'गले पड़े दामाद' के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश के शब्दों और प्रसंग के आधार पर देना है।
- व्यक्ति या घटना की पहचान के साथ उसके कारण अथवा प्रभाव को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: व्यवहार का प्रमाण गद्यांश में दामाद संबंध स्थापित हो जाने के बाद निश्चिंत होकर तीतर लड़ाता रहता है। यह व्यवहार उसकी अकर्मण्यता, गैरजिम्मेदारी और मनोरंजन में डूबे रहने की प्रवृत्ति को दिखाता है। वह पत्नी की मानसिक पीड़ा और घर की बिगड़ती दशा के प्रति कोई संवेदनशील या उत्तरदायी व्यवहार करता दिखाई नहीं देता।

चरण 2: परिवार के प्रति दृष्टिकोण बेटी विवश क्रोध में जलती रहती है और पारिवारिक द्वेष से खेती-बारी तथा पशुधन की दशा बिगड़ती जाती है, फिर भी दामाद निश्चिंत बना रहता है। वह गृहस्थी सँभालने में सहयोगी बनने के बजाय बोझ बन गया है। इसीलिए उसे गले पड़ा दामाद कहा गया है; यह संबोधन संबंध के अनचाहेपन और उसके अनुपयोगी व्यवहार, दोनों को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'गले पड़ा दामाद' अकर्मण्य, लापरवाह और गैरजिम्मेदार है। वह तीतर लड़ाने में मग्न रहता है तथा पत्नी की पीड़ा और घर की आर्थिक कठिनाइयों की चिंता नहीं करता, इसलिए परिवार के लिए बोझ बन जाता है।

त्वरित सुझाव: तीतर लड़ाने के उदाहरण से दामाद की अकर्मण्यता दिखाएँ और पत्नी तथा गृहस्थी के प्रति लापरवाही स्पष्ट करें।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

शिरीष की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष के स्वभाव के माध्यम से लेखक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनासक्त और प्रसन्न रहने का जीवन-मूल्य स्पष्ट करते हैं।
- तुलना का आधार बाहरी रूप नहीं, बल्कि कठिन वातावरण में बने रहने वाला मस्त और निर्लिप्त स्वभाव है।

चरण 1: तुलना की पहचान शिरीष की तुलना एक अवधूत से की गई है। अवधूत संसार के मोह और सुख-दुःख के बंधनों से मुक्त रहने वाला मस्त साधक होता है। इसी प्रकार शिरीष भी बाहरी परिस्थितियों से विचलित हुए बिना अपना सौंदर्य और सरसता बनाए रखता है। लेखक उसे केवल एक सुंदर वृक्ष के रूप में नहीं, बल्कि जीवन जीने की प्रेरणा देने वाले व्यक्तित्व के रूप में देखते हैं।

चरण 2: तुलना का कारण और पाठ का प्रसंग भीषण गर्मी और लू से जब अन्य वनस्पतियाँ मुरझाने लगती हैं, तब भी शिरीष फूलों से लदा रहता है। वह वातावरण की कठोरता से हारकर उदास नहीं होता। वह वायुमंडल से जीवन-रस खींचकर कठिन परिस्थितियों में भी उल्लास बनाए रखता है। उसकी यह मस्ती अवधूत की अनासक्ति के समान है। सुख के लिए अनुकूल वातावरण पर निर्भर रहने के बजाय वह अपने भीतर की शक्ति से जीता है। इसलिए यह तुलना संघर्ष के बीच कोमलता, प्रसन्नता और जीवनी-शक्ति बनाए रखने का संदेश देती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की तुलना अवधूत से हुई है, क्योंकि वह भीषण गर्मी में भी अनासक्त, मस्त और सरस रहता है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से हार नहीं मानता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अवधूत का नाम लिखकर गर्मी में शिरीष के खिले रहने का प्रसंग अवश्य जोड़ें।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खाली मन तथा भरी जेब से लेखक का क्या आशय है ? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खाली मन का संबंध अपनी आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान न होने से है; भरी जेब अधिक क्रयशक्ति का संकेत है।
- विवेकपूर्ण खरीदारी और बाज़ार के सम्मोहन में की गई अनावश्यक खरीदारी का अंतर पाठ का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: दोनों अभिव्यक्तियों का आशय खाली मन से लेखक का आशय ऐसे मन से है जिसमें अपनी वास्तविक जरूरतों का स्पष्ट बोध नहीं है। व्यक्ति यह तय नहीं कर पाता कि उसे क्या चाहिए और क्या नहीं। भरी जेब का अर्थ है खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा होना। जब जरूरत का विवेक अनुपस्थित हो और पैसा उपलब्ध हो, तब व्यक्ति केवल वस्तुओं के आकर्षण से प्रभावित होकर खरीदने लगता है। इसलिए खाली मन को सरलता या संतोष का पर्याय नहीं मानना चाहिए।

चरण 2: बाज़ार पर उनका प्रभाव खाली मन और भरी जेब का मेल बाज़ार के आकर्षण को विशेष प्रभावशाली बना देता है। सजी हुई वस्तुएँ व्यक्ति को बुलाती-सी लगती हैं और वह उपयोगिता की जगह दिखावे या लालसा से संचालित होता है। परिणामतः गैरजरूरी चीजों की खरीद बढ़ती है और बाज़ार का सम्मोहन सफल होता है। लेखक के मित्र के साथ भी ऐसा होता है: वे आवश्यकता से अधिक सामान लेकर लौटते हैं। इसके विपरीत, जरूरत पहचानकर जाने वाला व्यक्ति आवश्यक वस्तु खरीदता है; वह अपनी क्रयशक्ति को संयम में

रखकर बाज़ार को सार्थकता देता है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन आवश्यकता-बोध का अभाव और भरी जेब पर्याप्त धन का प्रतीक है। इनका मेल अनावश्यक खरीदारी बढ़ाकर बाज़ार के आकर्षण को प्रबल बनाता है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को पैसों की कमी न लिखें; उसे जरूरत की अस्पष्टता और भरी जेब को क्रयशक्ति से जोड़ें।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भक्तिन के स्वभाव की ऐसी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसने लेखिका को अपने अनुसार ढाल लिया । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में स्वभाव की विशेषता के साथ पाठ की घटना या व्यवहार का प्रमाण देना आवश्यक है।
- भक्तिन की दृढ़ता और आत्मीय सेवा ने लेखिका के दैनिक जीवन और खान-पान को प्रभावित किया।

चरण 1: दृढ़ और अपने ढंग पर अडिग स्वभाव भक्तिन अपने संस्कारों और जीवन-पद्धति पर दृढ़ रहने वाली स्त्री थी। वह आसानी से अपने रहन-सहन और खान-पान का ढंग बदलने को तैयार नहीं होती थी। अपनी बात के पक्ष में तर्क देना और उसे उचित सिद्ध कर देना उसकी विशेषता थी। इसलिए लेखिका उसे पूरी तरह अपने अनुकूल नहीं बना सकीं। उलटे, भक्तिन की बनाई हुई देहाती भोजन-पद्धति का प्रभाव लेखिका पर पड़ा और उन्हें उसकी रसोई तथा भोजन के ढंग से सामंजस्य बैठाना पड़ा। यह उसकी जिद के साथ प्रभावशाली व्यक्तित्व का भी प्रमाण है।

चरण 2: आत्मीय सेवा और अटूट लगाव भक्तिन की दूसरी विशेषता लेखिका के प्रति निष्ठापूर्ण सेवा और गहरा अपनापन था। वह केवल वेतन के लिए काम करने वाली सेविका की तरह व्यवहार नहीं करती थी, बल्कि लेखिका के सुख-दुःख और जरूरतों को अपना समझती थी। इसी आत्मीयता के कारण उसकी कठोरता भी स्वीकार्य हो जाती थी। लेखिका उसके श्रम, समर्पण और स्नेह को पहचानती थीं, इसलिए उसकी अनेक आदतों और व्यवस्थाओं को स्वीकार कर लेती थीं। इस प्रकार संबंध में केवल आदेश और पालन नहीं, बल्कि स्नेह के कारण परस्पर ढलने की स्थिति बनी।

चरण 3: निष्कर्ष अपने संस्कारों पर अडिग रहने की दृढ़ता तथा लेखिका के प्रति आत्मीय सेवा-निष्ठा के कारण भक्तिन ने लेखिका की दिनचर्या और खान-पान को अपने अनुसार ढाल लिया।

त्वरित सुझाव: दो अलग विशेषताएँ दें और हर विशेषता को लेखिका के जीवन पर पड़े प्रभाव से जोड़कर समझाएँ।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किन-किन रूपों में पाया जाता है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का भारतीयकरण उनके बाहरी रूप की नकल तक सीमित नहीं है; उसमें हास्य, करुणा और साधारण मनुष्य का संघर्ष सम्मिलित है।
- पाठ के उदाहरणों के आधार पर भारतीय अभिनेताओं तथा फिल्मों में चार्ली की शैली का रूपांतरण पहचानना है।

चरण 1: राज कपूर के रूप में भारतीयकरण पाठ में राज कपूर की आवारा और श्री 420 जैसी फिल्मों में चार्ली की छाप दिखाई गई है। साधारण आदमी, भटकता हुआ जीवन, बेढंगा पहनावा और विपत्तियों में भी हँसते रहने वाला चरित्र चार्ली की याद दिलाता है। राज कपूर ने इस छवि को भारतीय समाज की गरीबी, असमानता और संघर्ष से जोड़ा। इसलिए यह केवल वेशभूषा की नकल नहीं रही, बल्कि भारतीय जीवन में चार्ली के हास्य और करुणा का नया रूप बन गई। हँसाने वाला पात्र दर्शक की सहानुभूति भी प्राप्त करता है।

चरण 2: अन्य अभिनेताओं और हास्य-प्रसंगों में प्रभाव चार्ली का प्रभाव अनेक भारतीय कलाकारों के अभिनय में मिलता है। पाठ में दिलीप कुमार, देवानंद और अमिताभ बच्चन तक के हास्य-अभिनय में उनकी परंपरा का संकेत है। अनाड़ीपन, परिस्थितियों में फँसे सामान्य व्यक्ति की चेष्टाएँ और अपनी ही दयनीय स्थिति को हँसी में बदल देने की क्षमता इस प्रभाव के रूप हैं। भारतीय फिल्मों में ऐसा हास्य बार-बार दिखाई देता है जिसमें दर्शक पात्र पर हँसते हुए अपने जीवन की कठिनाइयाँ भी पहचानता है। इस तरह चार्ली का भारतीयकरण बाहरी अभिनय-शैली और भीतर की मानवीय करुणा, दोनों स्तरों पर हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली का भारतीयकरण राज कपूर की आवारा और श्री 420 की छवि तथा अन्य भारतीय अभिनेताओं के करुणा-मिश्रित हास्य और सामान्य व्यक्ति के संघर्षपूर्ण अभिनय में मिलता है।

त्वरित सुझाव: राज कपूर और उनकी दो फिल्मों का उल्लेख करके हास्य के साथ करुणा को भारतीयकरण का आधार बनाएँ।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति प्रथा को श्रम विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता ? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उचित श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि, योग्यता और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं पर आधारित होता है।
- जाति-प्रथा जन्म के आधार पर श्रमिकों को स्थायी और ऊँच-नीच वाले वर्गों में बाँध देती है।

चरण 1: जन्म-आधारित निर्धारण की समस्या आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा को उचित श्रम-विभाजन का आधार नहीं माना जा सकता, क्योंकि वह काम के साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है। उसमें व्यक्ति का पेशा उसकी अपनी रुचि, प्रशिक्षण और योग्यता देखकर नहीं, बल्कि जन्म और माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर पहले से निश्चित कर दिया जाता है। यह व्यवस्था श्रमिकों को ऊँच-नीच के स्तरों में भी बाँटती है। इसलिए इसे दक्षता बढ़ाने वाला स्वतंत्र और स्वाभाविक श्रम-विभाजन कहना गलत है।

चरण 2: पाठ से उदाहरण और परिणाम पाठ में यह स्थिति स्पष्ट की गई है कि उद्योग और तकनीक बदलने से किसी पुराने धंधे की आवश्यकता समाप्त हो सकती है। तब भी जाति का बंधन व्यक्ति को दूसरा व्यवसाय अपनाने की छूट नहीं देता। वह नया काम करके जीविका चलाने के बजाय अपने परंपरागत पेशे में बँधा रह सकता है और बेरोजगारी या भूख का सामना कर सकता है। इसके अतिरिक्त, कुछ पेशों को हीन मानने से उनमें लगे लोगों में काम के प्रति अरुचि पैदा होती है। जब न रुचि का सम्मान हो, न क्षमता के विकास और व्यवसाय बदलने का अवसर, तब उत्पादन-कुशलता भी घटती है।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशा और सामाजिक दर्जा तय करती है; वह रुचि, योग्यता तथा व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता रोकती है। इसलिए वह उचित श्रम-विभाजन का आधार नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम और श्रमिक के विभाजन का अंतर लिखें तथा धंधा बदल न पाने का पाठगत उदाहरण दें।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

'जूझ' के लेखक में स्वयं कविता रच सकने का आत्मविश्वास कैसे पैदा हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सौंदलगेकर का कविता पढ़ाने का ढंग लेखक की संवेदना और लय-बोध जगाता है।
- कवि को अपने जैसा मनुष्य समझने और स्वयं अभ्यास करने से सृजन का विश्वास पैदा होता है।

चरण 1: अध्यापक से मिली प्रेरणा सौंदलगेकर मास्टर कविता को भाव, लय और अभिनय के साथ पढ़ाते थे। वे अपनी रचनाएँ भी सुनाते थे और कवियों के विषय में बताते थे। उनके आत्मीय परिचय से लेखक की यह धारणा टूटी कि कवि कोई असाधारण, दूसरी दुनिया

के जीव होते हैं। उसने समझा कि अपने अनुभवों और भावनाओं को शब्द देने वाला सामान्य मनुष्य भी कविता बना सकता है।

चरण 2: अभ्यास से विकसित विश्वास लेखक खेतों में काम करते हुए और पशु चराते समय पढ़ी हुई कविताएँ गुनगुनाता तथा उनकी लय पर अपने शब्द बैठाता था। आसपास के दृश्यों और अनुभवों को कविता में ढालने की कोशिश से उसे अपनी रचनात्मक क्षमता का अनुभव हुआ। शिक्षक के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने इस अनुभव को आत्मविश्वास में बदल दिया।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर की प्रेरक शिक्षण-शैली, कवियों से मानसिक निकटता और स्वयं रचना के अभ्यास से लेखक में कविता लिख सकने का आत्मविश्वास जागा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिक्षक की प्रेरणा से आरंभ करके लेखक के अपने काव्य-अभ्यास तक का संबंध स्पष्ट कीजिए।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

महाकुण्ड में अशुद्ध जल को रोकने की क्या व्यवस्था थी ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महाकुंड की संरचना में पानी के रिसाव और बाहर के अशुद्ध जल के प्रवेश, दोनों को रोकने का ध्यान रखा गया था।
- जलरोधी गारा और अतिरिक्त दीवारें कुंड के पानी की शुद्धता बनाए रखने में सहायक थीं।

चरण 1: तल और दीवारों की बनावट महाकुंड के तल तथा दीवारों में पक्की ईंटें बहुत सावधानी से जमाई गई थीं। ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का प्रयोग किया गया था। इस व्यवस्था से जोड़ सुरक्षित रहते थे; कुंड का जल बाहर नहीं रिसता था और बाहर का अशुद्ध पानी भी भीतर नहीं पहुँच पाता था।

चरण 2: अतिरिक्त सुरक्षा की व्यवस्था कुंड की पार्श्व की दीवारों के साथ एक और दीवार खड़ी की गई थी, जिसमें सफेद डामर का प्रयोग था। यह अतिरिक्त जलरोधी सुरक्षा थी। इस तरह केवल जल भरने का स्थान बनाना उद्देश्य नहीं था, बल्कि उसे बाहरी अशुद्ध जल से बचाना भी निर्माण-योजना का अंग था। यह व्यवस्था तत्कालीन वास्तुकला और स्वच्छता-बोध की विकसित स्थिति बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष चूने-चिरोड़ी के गारे से जुड़े पक्के ईंटों के तल और दीवारों तथा सफेद डामर वाली अतिरिक्त दीवार ने बाहरी अशुद्ध जल को महाकुंड में प्रवेश करने से रोका।

त्वरित सुझाव: अशुद्ध जल रोकने के प्रश्न में चूना-चिरोड़ी का गारा और सफेद डामर वाली अतिरिक्त दीवार अवश्य लिखिए।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

कार्यालय में अपने सहकर्मियों के साथ सेक्शन ऑफ़िसर वाई.डी. पंत के व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर पंत का व्यवहार अनुशासन और पुराने कार्यालयी संस्कारों से प्रभावित है।
- हास्य और बातचीत के प्रसंग उनके व्यक्तित्व की कठोरता के साथ आत्मीयता भी दिखाते हैं।

चरण 1: अनुशासनप्रिय अधिकारी सेक्शन ऑफीसर वाई.डी. पंत कार्यालय के काम और समय के विषय में अनुशासनप्रिय हैं। वे स्वयं समय पूरा होने तक बैठते हैं और अधीनस्थों से भी काम तथा नियमों के पालन की अपेक्षा रखते हैं। उनके नियंत्रण और कठोरता के कारण कर्मचारियों को कभी-कभी खीझ होती है; वे अपने पद की जिम्मेदारी को हलके में नहीं लेते।

चरण 2: हँसी-मजाक और आत्मीयता दफ्तर का वातावरण केवल कठोर न रहे, इसलिए वे सहकर्मियों से चुटीली बातें और हँसी-मजाक भी करते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर सहकर्मियों की जलपान की माँग के लिए रुपये देना उनकी मिलनसारता दिखाता है। स्वयं

ऐसी पार्टी को अपनी परंपरा के अनुकूल न मानना उनका पुराना संस्कार है, पर इससे वे साथियों की प्रसन्नता पर पूरी रोक नहीं लगाते।

चरण 3: निष्कर्ष वाई.डी. पंत सहकर्मियों के प्रति अनुशासनप्रिय और नियंत्रक हैं, किंतु उनके व्यवहार में हास्य, अपनापन और साथियों की भावनाओं का ध्यान भी है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी को संतुलित रखने के लिए कार्यालय का अनुशासन और साथियों से हँसी-मजाक, दोनों का उदाहरण दीजिए।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

वाई.डी. पन्त की पत्नी पति की अपेक्षा सन्तान की ओर क्यों पक्षपाती दिखलाई पड़ती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिवार के मतभेदों का मूल कारण बदलती जीवन-शैली के प्रति पति-पत्नी का भिन्न दृष्टिकोण है।
- पत्नी का संतान के निकट होना उसके अपने पूर्व अनुभवों और नई परिस्थितियों को स्वीकार करने से जुड़ा है।

चरण 1: पति का परंपराओं से आग्रह यशोधर बाबू पुराने संस्कारों, किशनदा के आदर्शों और अपनी परिचित जीवन-पद्धति से गहरे जुड़े हैं। नई सुविधाओं, बच्चों की पसंद और आधुनिक उत्सवों को वे सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। परिवार की साधारण बातों में भी उनकी असहमति सामने आती है। इससे बच्चों और उनके बीच मानसिक दूरी बढ़ती है; पत्नी को भी उनका निरंतर विरोध व्यावहारिक नहीं लगता।

चरण 2: पत्नी के अपने अनुभव पत्नी ने विवाह के बाद पुराने संयुक्त परिवार की मर्यादाओं और बड़े-बुजुर्गों के अनुशासन में जीवन बिताया है। उस समय अपनी इच्छाओं के लिए उसे अधिक स्वतंत्रता नहीं मिली थी। अब बच्चों के बड़े होने और घर की परिस्थिति बदलने पर वह अपनी पसंद से रहने का अवसर पाती है। इसलिए वह पति की हर पुरानी मान्यता को मान लेने के लिए तैयार नहीं है।

चरण 3: संतान के साथ सामंजस्य वह बच्चों की प्रगति, उनकी रुचियों और नई जीवन-शैली में आनंद अनुभव करती है तथा समय के अनुसार अपने को ढाल लेती है। बच्चे भी उसे अपनी खुशियों में सम्मिलित करते हैं। उनकी बातों का समर्थन करने से वह पति को संतान की पक्षधर दिखाई देती है। वस्तुतः उसका झुकाव पति के प्रति दुर्भावना की अपेक्षा नई परिस्थितियों को स्वीकार करने तथा परिवार की प्रसन्नता में भाग लेने का परिणाम है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्नी अपने पुराने अभावों और बंधनों से निकलकर बच्चों के साथ बदलते समय को स्वीकार करती है, जबकि यशोधर बाबू पुरानी मान्यताओं पर अड़े रहते हैं; इसी भिन्नता से वह संतान के प्रति पक्षपाती दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: पत्नी की पक्षधरता समझाते समय उसके पुराने जीवन, बदलते समय और पति के परंपरागत आग्रह को जोड़िए।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

दत्तात्राव ने लेखक की पढ़ाई की समस्या का समाधान किस प्रकार किया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की पढ़ाई में बाधा पिता का विरोध और खेती के लिए उसके श्रम की आवश्यकता थी।
- दत्ताजी राव ने अपने प्रभाव और शिक्षा-समर्थक दृष्टि से पिता का विरोध कम कराया।

चरण 1: समस्या को समझना लेखक पढ़ना चाहता था, लेकिन पिता ने उसे पाठशाला से हटाकर खेती के काम में लगा दिया था। लेखक और उसकी माँ ने दत्ताजी राव से सहायता माँगी। उन्होंने बालक की पढ़ने की तीव्र इच्छा तथा पिता द्वारा उसे रोकने की बात समझी। माँ और बेटे ने पिता को उनके पास पहुँचाने की युक्ति भी अपनाई, क्योंकि पिता सीधे अपने विरुद्ध शिकायत सुनने के लिए तैयार नहीं होते।

चरण 2: पिता पर प्रभाव डालना दत्ताजी राव गाँव के प्रभावशाली व्यक्ति थे और पिता उनकी बात का आदर करते थे। उन्होंने पिता को बालक की पढ़ाई छुड़ाने पर फटकारा और उसे फिर पाठशाला भेजने के लिए कहा। उन्होंने पिता की बहानेबाजी को स्वीकार नहीं किया और आवश्यकता पड़ने पर बालक की शिक्षा का दायित्व अपने ऊपर लेने का आश्वासन भी दिया। इस दृढ़ हस्तक्षेप ने पिता को अनुमति देने की ओर विवश किया।

चरण 3: पढ़ाई फिर आरंभ होना इसके बाद पिता खेती का काम जारी रखने की शर्त पर लेखक को स्कूल भेजने के लिए राजी हुए। लेखक को स्कूल जाने से पहले खेत का काम और लौटने पर पशुओं की देखभाल करनी पड़ती थी। कठिनाइयाँ समाप्त नहीं हुईं, लेकिन पाठशाला का बंद दरवाजा खुल गया। इस प्रकार दत्ताजी राव ने केवल सहानुभूति नहीं दिखाई, अपने सामाजिक प्रभाव से शिक्षा प्राप्त करने का वास्तविक अवसर दिलाया।

चरण 4: निष्कर्ष दत्ताजी राव ने लेखक की समस्या सुनकर पिता को समझाया और फटकारा, शिक्षा में सहायता का भरोसा दिया तथा स्कूल जाने की अनुमति दिलाई; उनके हस्तक्षेप से लेखक की पढ़ाई फिर शुरू हुई।

त्वरित सुझाव: समाधान का क्रम रखें: माँ-बेटे की सहायता-याचना, पिता पर दत्ताजी का दबाव और स्कूल में पुनः प्रवेश।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

ऐन फ्रेंक की डायरी के आधार पर नाज़ियों के अत्याचारों पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी यहूदी समुदाय के उत्पीड़न को एक किशोरी के निजी अनुभवों से सामने लाती है।
- नस्ली भेदभाव ने जीवन, स्वतंत्रता, सुरक्षा और सामान्य मानवीय संबंधों को नष्ट किया।

चरण 1: यहूदियों के अधिकारों का हनन नाज़ियों ने यहूदियों के लिए भेदभावपूर्ण आदेश लागू किए। उन्हें पहचान के लिए पीला सितारा पहनना पड़ता था और आवागमन, खरीदारी, मनोरंजन तथा शिक्षा जैसी सामान्य गतिविधियों पर अनेक रोक थीं। केवल यहूदी होने के कारण नागरिक जीवन से उन्हें अलग कर दिया गया। डायरी से स्पष्ट होता है कि यह किसी व्यक्तिगत अपराध का दंड नहीं, पूरे समुदाय को अपमानित और असुरक्षित बनाने की नीति थी।

चरण 2: गिरफ्तारी और आतंक यहूदियों को पकड़कर यातना-शिविरों में भेजा जा रहा था। परिवार बिछुड़ते थे और पकड़े जाने का भय हर समय बना रहता था। ऐन का परिवार भी अपनी रक्षा के लिए गुप्त स्थान पर छिपा। वहाँ खुलकर चलना-बोलना भी खतरे से खाली नहीं था। बाहर की आहट, चोरी या पुलिस की आशंका से छिपे हुए लोगों की घबराहट बढ़ जाती थी। यह वातावरण नाज़ी शासन की अमानवीयता को उजागर करता है।

चरण 3: बालमन और सामान्य जीवन पर प्रभाव ऐन को विद्यालय, मित्रों, खुली हवा और सामान्य किशोर जीवन से वंचित रहना पड़ा। बंद स्थान में अभाव, तनाव और अनिश्चित भविष्य झेलना उसकी विवशता बन गई। उसकी डायरी बताती है कि अत्याचार केवल शारीरिक हिंसा नहीं था; वह स्वतंत्रता, गरिमा और मानसिक शांति का विनाश भी था। फिर भी उसके भीतर जीवन के प्रति आशा बची रहना दमन के विरुद्ध मानवीय जिजीविषा को प्रकट करता है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक की डायरी नाज़ियों के नस्ली भेदभाव, अधिकारों के हनन, गिरफ्तारी और आतंक का साक्ष्य है; यह दिखाती है कि इस क्रूरता ने निर्दोष लोगों, विशेषकर बच्चों, का सामान्य जीवन छीन लिया।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में एक भेदभावपूर्ण नियम, गिरफ्तारी का भय और ऐन के छिपे जीवन पर प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

14. सौंदलगेकर के व्यक्तित्व के आधार पर किसी अध्यापक के लिए आवश्यक जीवन-मूल्यों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक आदर्श अध्यापक का व्यक्तित्व विषय-ज्ञान, संवेदनशीलता और विद्यार्थियों को प्रेरित करने की क्षमता से बनता है।
- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में सौंदलगेकर मास्टर की काव्य-रुचि बालक की सृजनशीलता को विकसित करती है।

चरण 1: विषय के प्रति प्रेम और शिक्षण में तन्मयता सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते थे और कविताओं को अत्यंत रसपूर्ण ढंग से सुनाते थे। उनका सुरीला कंठ और कविता में डूबकर पढ़ाने का ढंग विद्यार्थियों को प्रभावित करता था। वे केवल कविता का अर्थ बताकर अपना कर्तव्य पूरा नहीं मानते थे, बल्कि उसके भाव और सौंदर्य का अनुभव कराते थे। इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक में अपने विषय के प्रति गहरा प्रेम, अध्ययनशीलता और उसे रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की लगन होनी चाहिए। जिस विषय में शिक्षक स्वयं आनंद लेता है, उसमें विद्यार्थी की रुचि भी सहज रूप से जागती है।

चरण 2: प्रतिभा की पहचान और आत्मविश्वास का विकास मास्टर स्वयं कविताएँ लिखते थे और कवियों के प्रसंग भी सुनाते थे। उनके संपर्क से लेखक के मन में यह विश्वास पैदा हुआ कि कविता रचने वाले लोग भी उसी के जैसे साधारण मनुष्य होते हैं और वह भी कविता लिख सकता है। अध्यापक का आवश्यक जीवन-मूल्य यही है कि वह विद्यार्थी की छिपी हुई क्षमता को पहचाने और उसे आगे बढ़ने का साहस दे। उसे बालक की सामाजिक या आर्थिक स्थिति के आधार पर उसकी प्रतिभा का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।

चरण 3: सहृदयता, सहयोग और सृजनशीलता का प्रोत्साहन सौंदलगेकर लेखक की रचनाओं में रुचि लेते और उसके प्रयासों को प्रोत्साहित करते थे। लेखक अपनी कविताएँ उन्हें सुनाता था और उनसे मार्गदर्शन पाता था। ऐसा अपनापन शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विश्वास का संबंध बनाता है। आदर्श अध्यापक में धैर्यपूर्वक सुनने, रचनात्मक प्रयास का सम्मान करने और त्रुटियों को सुधारने की सहयोगी भावना होनी चाहिए। उसे विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति और स्वतंत्र अभिव्यक्ति विकसित करनी चाहिए। सौंदलगेकर के कारण लेखक खेतों में काम करते हुए भी कविता के आनंद का अनुभव करने लगा; शिक्षा उसके कठिन जीवन में आशा और आनंद का स्रोत बनी।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर का व्यक्तित्व बताता है कि आदर्श अध्यापक के लिए ज्ञान के साथ सहृदयता, समर्पण, सृजनशीलता और प्रोत्साहन का भाव आवश्यक है। उसकी सफलता विद्यार्थी में अपनी क्षमता पर विश्वास जगाने और उसके जीवन को नई दिशा देने में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक जीवन-मूल्य को सौंदलगेकर की शिक्षण-पद्धति या लेखक पर पड़े उसके प्रभाव से जोड़िए।

अथवा

14. 'सिलवर वेडिंग' कहानी के पात्र किशन दा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिलवर वेडिंग' में किशन दा यशोधर बाबू के जीवन-दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं।
- किशन दा के माध्यम से सादगी, आत्मनिर्भरता, सामाजिक आत्मीयता और परंपरागत संस्कारों के मूल्य उभरते हैं।

चरण 1: अभिभावक जैसा अपनापन और सामाजिक सहयोग यशोधर बाबू के आरंभिक दिल्ली-जीवन में किशन दा ने उन्हें आश्रय और मार्गदर्शन दिया था। वे अपने पहाड़ी समाज के लोगों के लिए सहारा थे और उनके साथ आत्मीय संबंध रखते थे। इसी कारण यशोधर बाबू उन्हें केवल परिचित व्यक्ति नहीं, बल्कि अपने जीवन को सँवारने वाले बड़े-बुजुर्ग के रूप में याद करते हैं। दूसरों के काम आना, संबंधों का निर्वाह करना और अपने समुदाय के प्रति उत्तरदायी रहना ऐसे मूल्य हैं जो उनकी सोच में बने रहे।

चरण 2: सादा जीवन और आत्मनिर्भरता किशन दा का जीवन आडंबर और दिखावे से दूर था। उन्होंने विवाह नहीं किया और अपने ढंग से जीवन बिताया। उनकी सादगी तथा अपने काम स्वयं करने की प्रवृत्ति यशोधर बाबू को प्रभावित करती रही। इसलिए यशोधर बाबू नई पीढ़ी के उपभोग, महँगे उपहारों और उत्सव के बाहरी प्रदर्शन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। उनके लिए जीवन की सार्थकता सुविधाओं की अधिकता में नहीं, बल्कि सादगी, उपयोगिता और आत्मसम्मान में है।

चरण 3: संस्कार, विवेक और जीवन की सीमाओं का बोध किशन दा से प्राप्त संस्कारों के कारण यशोधर बाबू पुराने सामाजिक व्यवहार, बुजुर्गों के आदर और आत्मीय मेल-जोल को महत्त्व देते हैं। आधुनिक व्यवहार को देखकर उनके मन में किशन दा का प्रिय वाक्य 'समहाउ इम्प्रॉपर' उभरता है। यह उनकी सोच में बसे पुराने विवेक और असहजता को व्यक्त करता है। साथ ही, किशन दा के अंतिम दिनों के अकेलेपन की स्मृति उन्हें विचलित करती है। वे उनके आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी उस अकेले अंत की पीड़ा अनुभव करते हैं। इस प्रकार कहानी में किशन दा की स्मृति केवल अंधानुकरण नहीं, बल्कि संबंधों और बुढ़ापे की असुरक्षा पर विचार करने का आधार भी बनती है।

चरण 4: निष्कर्ष किशन दा की सादगी, आत्मनिर्भरता, परोपकार, आत्मीयता और सांस्कृतिक संस्कार यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। बदलते पारिवारिक परिवेश में वे इन्हीं मूल्यों के आधार पर अपने और नई पीढ़ी के आचरण को परखते हैं।

त्वरित सुझाव: किशन दा के गुण गिनाने के साथ यह भी बताइए कि वे यशोधर बाबू के वर्तमान व्यवहार और सोच में कैसे दिखाई देते हैं।